विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 10 | अंक : 39 | सितंबर, 2017

विश्व भर में हिंदी दिवस 2017 का आयोजन

गत वर्ष के समान परम्परागत रूप से 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्व भर में महीना भर हिंदी की गतिविधियाँ आयोजित होती रहीं। भारत के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों में हिंदी दिवस अत्यंत रुचि के साथ मनाया गया। भारत और विदेश में हिंदी दिवस के आयोजन की कुछ चयनित रिपोर्ट विश्व हिंदी समाचार के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं।

पृ. 2-6

मॉरीशस में 'नारी की एकरूपता की खोज' विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी

1,2 तथा 3 सितंबर, 2017 को लेखिका संघ, नई दिल्ली, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारतीय उच्चायोग मॉरीशस, हिंदी स्पीकिंग यूनियन तथा आर्य सभा मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में '***नारी की एकरूपता की खोज***' विषय पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

पृ. 7-8

एच. एस. सी. की परीक्षा में एक मॉरीशसीय छात्रा हिंदी विषय में विश्व में अव्वल

2016 के कैम्ब्रिज हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट (12वीं) की परीक्षा में मॉरीशस के शर्मा जगदम्बी स्टेट सेकंडरी स्कूल की छात्रा निवेदिता रामी केरिया को पूरे विश्व में हिंदी विषय में सबसे अधिक अंक प्राप्त हुए।

पृ. 16

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित त्रैमासिक कार्यक्रम विचार मंच : 'मोहन राकेश तथा 'आधे-अधूरे' का शिक्षण'

27 जुलाई, 2017 को स्वराज भवन, लालमाटी, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में '***मोहन राकेश तथा 'आधे-अधूरे' का शिक्षण***' विषय पर विचार-मंच का आयोजन किया गया।

पृ. 11

भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

15 सितंबर, 2017 को दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर में स्थित श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलिज में हिंदी संगम फ़ाउंडेशन, भारत और यू.एस.ए. द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सक्रिय सहयोग से '***विश्व पटल पर हिंदी अध्यापन की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ***' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में भारत और भारत से इतर हो रहे शोध कार्यों और नई गतिविधियों को भारतीय अध्यापकों, शोधकर्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करना और इस संबंध में निरंतर संवाद कायम करना है।

पृ. 9

इस अंक में :

- हिंदी दिवस 2017 : भारत — पृ. 2 – 3
- हिंदी दिवस 2017 : मॉरीशस — पृ. 3 – 4
- हिंदी दिवस 2017 : विश्व भर में — पृ. 5 – 6
- संगोष्ठी/गोष्ठी/सम्मेलन — 7 – 10
- कार्यशाला/परिचर्चा/जयंती — पृ. 10 – 11
- लोकार्पण — पृ. 12 – 13
- सम्मान — पृ. 14
- श्रद्धांजलि — पृ. 15
- संपादकीय/सूचना — पृ. 16

ISSN 1694-2485

हिंदी दिवस 2017 : भारत

विज्ञान भवन, नई दिल्ली, भारत

14 सितंबर, 2017 को विज्ञान भवन में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद द्वारा विभिन्न विभागों, मंत्रालयों तथा कार्यालयों के प्रमुखों को राष्ट्रभाषा पुरस्कार प्रदान किए गए तथा 'लीला' मोबाइल एप को लॉन्च किया गया। इस एप से आम लोग हिंदी भाषा को आसानी से समझ पाएँगे। इस अवसर पर गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह भी उपस्थित थे, जिन्होंने हिंदी को जोड़नेवाली भाषा बताया तथा कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में देश को जोड़ने के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी की बड़ी भूमिका रही है। श्री रामनाथ कोविंद ने हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए तथा सम्मानितों को बधाई देते हुए हिंदी दिवस के इतिहास पर बात की तथा सभी से विनम्र आग्रह किया कि दूसरी भारतीय भाषाओं के बोलनेवाले देशवासी उत्साह से हिंदी को अपनाएँ ताकि हिंदी भाषी लोग भी दूसरी भारतीय भाषाओं को सीखने हेतु उत्साहित हों।

राष्ट्रपति जी ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की उदार भावना को हिंदी भाषा के स्वरूप का हिस्सा बताया। साथ-साथ उन्होंने हिंदी को मौलिक सोच की भाषा कहकर कहा कि वह अनुवाद की नहीं, बल्कि संवाद की भाषा है। डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने से हिंदी भाषा को और अधिक बल मिलेगा। विश्व बाज़ार में अपनी पहचान को सुदृढ़ बनाते हुए कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए हिंदी एक अनुकूल भाषा बन रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी सीखनेवालों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है, जिससे उसको एक नई पहचान मिली है।

साभार : 'भारत के राष्ट्रपति' वेबसाइट तथा राज एक्सप्रेस.कॉम

प्रभासाक्षी.कॉम, नई दिल्ली

14 सितंबर, 2017 को प्रभासाक्षी.कॉम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आयोजित सुलेखन और कविता-पाठ के साथ-साथ मुहावरों पर मूक अभिनय एवं हिंदी में लिखे अंकों की बड़ी से बड़ी संख्या के उच्चारण जैसी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री अनुतोष पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज के युग में हिंदी का बोलबाला है, हिंदी की लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि आज हिंदी पुस्तकों के पाठकों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, हिंदी साहित्य में नए-नए लेखक तमाम नए प्रयोग कर रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन अनुतोष पाण्डेय ने किया और धन्यवाद-ज्ञापन नीरज कुमार दुबे ने किया।

साभार : प्रभासाक्षी.कॉम

दाउदनगर, औरंगाबाद

14 सितंबर, 2017 को कोचिंग सेंटर, दाउदनगर शहर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक श्री ओमप्रकाश कुमार ने किया, जिन्होंने हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। संस्था के निदेशक श्री बृजेश कुमार ने कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है, जिसे कम समय में सीखने का मौका मिलता है। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त पथ-निर्माण के इंजीनियर रामअवध सिंह यादव, ललन कुमार, उत्तम कुमार, दानिश अहमद, अभिषेक कुमार, संजीव कुमार आदि उपस्थित थे। संस्था के विद्यार्थियों ने भी समारोह में सक्रिय रूप से भाग लिया।

साभार : मगध एक्सप्रेस.इन

भोपाल, मध्य प्रदेश

14 सितंबर, 2017 को अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा समन्वय भवन, भोपाल, मध्य प्रदेश में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने हिंदी के लिए सतत् जनजागरण की आवश्यकता बताते हुए कहा कि वह दुनिया में बोली जानेवाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। हिंदी के महत्व का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है, कि अब गूगल और माइक्रोसॉफ़्ट जैसी कंपनियाँ अंग्रेज़ी के साथ हिंदी की ओर रूख कर रही हैं। इसीलिए हिंदी को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। इस अवसर पर हिंदी के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए कई विद्वानों को संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित हिंदी भाषा सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 2016-17 के लिए 'सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान' माइक्रोसॉफ़्ट के प्रतिनिधि श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच को दिया गया। हिंदी भाषा के तहत तेजेन्द्र शर्मा को 'निर्मल वर्मा सम्मान', डॉ. हेमराज सुन्दर को 'फ़ादर कामिल बुल्के सम्मान', प्रो. हरिमोहन को 'गुणाकार मुले सम्मान' और प्रो. ओकेन लेगो को 'हिंदी सेवा सम्मान' दिया गया। मालती जोशी, ललित दुबे, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और डॉ. कमल किशोर गोयनका को 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार' दिया गया और 'शरद जोशी पुरस्कार' हेतु गोपाल चतुर्वेदी, डॉ. सूर्यबाला, प्रेम जन्मेजय और नर्मदा प्रसाद उपाध्याय का चयन किया गया। कार्यक्रम में भोपाल के सांसद श्री आलोक संजय और विवि के कुलपति प्रो. रामदेव भारद्वाज उपस्थित थे।

साभार : आर.एन.इंडियान्यूज़.कॉम

चंडीगढ़

14 सितंबर, 2017 को हरियाणा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार-पत्र 'दैनिक-भास्कर' के स्टेट हेड व संपादक श्री दीपक धीमान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। नाबार्ड, हरियाणा, चंडीगढ़ के महाप्रबंधक श्री सुखविंदर सिंह भटोआ ने अपने वक्तव्य में हिंदी सप्ताह के दौरान स्टाफ़/सदस्यों हेतु राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आयोजित विविध नवोन्मेषी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। श्री दीपक धीमान ने नाबार्ड की राजभाषा के प्रति की जा रही उल्लेखनीय पहल की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय उत्थान के केंद्र में निज भाषा की बहुत संजीदा भूमिका होती है। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों सहित स्टाफ़/सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साभार : इंडियान्यूज़कॉलिंग.कॉम

डोम्बिवली

14 सितंबर, 2017 को डोम्बिवली स्थित ग्रोग्रासवाडी के स्वयंवर सभागृह में महेश पाटिल प्रतिष्ठान, गोपाल मानस मंडल और वेब न्यूज़ पोर्टल 'मुंबई आस पास' के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस के अवसर पर एक भव्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कवि जयप्रकाश मिश्र मिलिंद, सत्यदेव विजय, रितेश गौड़, जीतेन्द्र पांडेय, रासबिहारी पांडेय, कमलेश पांडेय तरुण, चंद्रमणि चौबे और नव कवि अवधेश यादव ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री महेश पाटिल ने अपने वक्तव्य में कहा कि राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान करना सभी का काम है, राष्ट्रभाषा का सम्मान ही राष्ट्र का सम्मान करने की पहली सीढ़ी है। कार्यक्रम का संचालन कवि एवं पत्रकार श्री कर्ण हिंदुस्तानी ने किया।

साभार : मुंबई आस-पास.कॉम

झारखंड

14 सितंबर, 2017 को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, ब्रांबे के सभागार में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. नंद कुमार यादव, प्रति कुलपति प्रो. वी. के दास एवं टी.एन.बी. कॉलिज भागलपुर के सेवानिवृत्त हिंदी प्रो. नृपेंद्र प्रसाद वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कुलपति प्रो. नंद कुमार यादव ने कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे व्यावसायिक और व्यावहारिक दोनों ही स्थितियों में हिंदी का प्रयोग ज़्यादा करें और युवाओं से अपील की कि वे हिंदी बोलने में शर्म की जगह गर्व की अनुभूति करें। प्रतिकुलपति प्रो. वी के दास ने कहा कि अंग्रेज़ी उनके लिए सिर्फ़ रोज़गार की भाषा है, लेकिन हिंदी उनके सम्मान की भाषा है। प्रो. नृपेंद्र प्रसाद वर्मा ने अपने वक्तव्य में हिंदी के प्रसार पर विशेष ज़ोर दिया। केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : झारखण्ड केंद्रीय विश्वविद्यालय का वेबसाइट

शहागंज, औरंगाबाद

15 सितंबर, 2017 को महाराष्ट्र हिंदी विद्यालय, शहागंज, औरंगाबाद में महाराष्ट्र हिंदी ग्रंथालय व वाचनालय की ओर से हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी वाद-विवाद स्पर्धा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अनंत वडघणे ने की। इस अवसर पर विद्यालय की मुख्य अध्यापिका श्रीमती अनुराधा गणोरकर, पर्यवेक्षिका श्रीमती वैभवी कोरान्ने उपस्थित थीं। वाद-विवाद स्पर्धा के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। डॉ. वडघणे ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इंटरनेट के अच्छे और बुरे परिणामों के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर नामचीन शालाओं के विद्यार्थी उपस्थित थे। सत्र का संचालन श्री प्रकाश वाघमारे ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री दाभाड़े एस.एस. ने किया।

महाराष्ट्र हिंदी ग्रंथालय की रिपोर्ट

वर्धा

14 सितंबर, 2017 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के गालिब सभागार में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र रहे, जिन्होंने हिंदी को विश्व मन की भाषा बताकर उसे सोशल मीडिया से जोड़कर तकनीक की भाषा बनाने की बात कही, ताकि बदले परिदृश्य में व्यावहारिकता को अपनाकर भाषा का स्वाभिमान जगाने से हिंदी को और बल मिले। साथ-साथ उन्होंने सचिवालय की भावी योजनाओं एवं परियोजनाओं की जानकारी भी दी। प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए यूरोपीय देशों में हिंदी फ़िल्मों और धारावाहिकों की प्रसिद्धि का उल्लेख किया। समारोह में अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री राजेश यादव ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन कुलसचिव श्री कादर नवाज़ ने किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी दिवस 2017 : मॉरीशस

मॉरीशस में तुलसी जयंती के उपलक्ष्य में हिंदी दिवस

12 अगस्त, 2017 को हिंदी प्रचारिणी सभा, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में तुलसी जयंती के उपलक्ष्य में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडेय रहीं। विशेष अतिथि के रूप में कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रुपन उपस्थित थे। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र भी उपस्थित थे। उन्होंने सभी से हिंदी भाषा को आगे ले जाने की माँग की। कार्यक्रम की अध्यक्षता (आई.सी.सी.आर हिंदी चेयर) प्रो. उमेश कुमार सिंह ने की। सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने अतिथियों का स्वागत करते हुए यह घोषणा की कि इस वर्ष से उत्तमा-साहित्य रत्न के एक छात्र को हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु 'हिंदी प्रचारिणी सभा छात्रवृत्ति' दी जा रही है। इस अवसर पर 'पंकज' विशेषांक पत्रिका का विमोचन किया गया तथा श्री धनराज शम्भु के कहानी-संग्रह 'अस्मिता' का भी लोकार्पण हुआ। कविता-वाचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कुमारी प्रिशनी पोराहू ने अपनी कविता प्रस्तुत की।

प्रो. उमेश कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में तुलसीदास द्वारा रचित ग्रंथ के मानव मूल्यों पर ज़ोर दिया तथा हिंदी भाषा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक पहुँचाने की बात की। डॉ. श्रीमती नूतन पांडेय ने हिंदी दिवस मनाने के उद्देश्यों पर बात की तथा 'दुर्गा' हस्तलिखित पत्रिका के पुनर्प्रकाशन पर सभा को बधाई दी। माननीय पृथ्वीराजसिंह रूपन ने छात्रों को बधाई दी तथा हिंदी भाषा पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर अन्य गण्यमान्य अतिथि, महात्मा गांधी संस्थान के व्याख्याता, हिंदी प्रेमी, शिक्षक, छात्र एवं अभिभावक उपस्थित थे।

हिंदी प्रचारिणी सभा की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में हिंदी दिवस के संदर्भ में सप्ताह भर की गतिविधियाँ

पौधे के सींचन के साथ हिंदी सप्ताह का उद्घाटन (बाएँ से दाएँ) डॉ. विद्योत्मा कुंजल (निदेशिका, एम.जी.आई.), डॉ. कृष्ण कुमार झा (वरिष्ठ व्याख्याता, हिंदी विभाग), श्रीमती कल्पना लालजी (कवयित्री)

महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में पिछले एक दशक से हिंदी दिवस के संदर्भ में सप्ताह भर की गतिविधियों की परंपरा स्थापित है। वर्ष 2017 के हिंदी दिवस के संदर्भ में संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा 7 से 14 सितंबर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत स्वरचित कविता-पठन प्रतियोगिता, आशुवाक् प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता तथा पोस्टर प्रतियोगिता सप्ताह भर की विशेष गतिविधियाँ रहीं। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन 7 सितंबर, 2017 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में कवयित्री श्रीमती कल्पना लालजी तथा महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल द्वारा किया गया।

स्वरचित कविता–पठन प्रतियोगिता

श्री श्रवीण शर्मा बेनिदीन, स्वरचित कविता-पठन प्रतियोगिता के विजेता

7 सितंबर को ही उद्घाटन-समारोह के तुरंत बाद स्वरचित कविता-पठन प्रतियोगिता का आरंभ हुआ। निर्णायक मंडल के सदस्य लेखिका कल्पना लालजी, डॉ. राजरानी गोबिन तथा डॉ. हेमराज सुंदर थे। संस्थान के प्राध्यापकों व छात्रों ने प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं को सुना। प्रतियोगिता के विजेता टी.डी.पी. के श्रवीण शर्मा बेनिदीन रहे। द्वितीय पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा सुश्री सोनम सुरूप तथा तृतीय पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र श्री राजेश्वर सितोहल को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों व प्राध्यापकों द्वारा कविता-पाठ भी किया गया। मंच-संचालक और प्रतियोगिता आयोजक डॉ. कृष्ण कुमार झा एवं सुश्री अंजलि चिंतामणि रहे।

आशुवाक् प्रतियोगिता

आशुवाक् प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के सदस्य (बाएँ से दाएँ) डॉ. विनय गुदारी (प्राध्यापक, हिंदी विभाग), श्री निरंजन बीगन (प्रबंधक, शिक्षा मंत्रालय), डॉ. उमेश कुमार सिंह (आई.सी.सी.आर. चेयर, हिंदी)

8 सितंबर को आशुवाक प्रतियोगिता के लिए विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र विशिष्ट अतिथि रहे, जिन्होंने प्रथम 3 प्रतिभागियों का चयन किया। निर्णायक मंडल में शिक्षा मंत्रालय के एडमिनिस्ट्रेटर श्री निरंजन बीगन, आई. सी.सी.आर. चेयर डॉ. उमेश कुमार सिंह और प्राध्यापक डॉ. विनय गुदारी रहे। बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा रिया गोपोल प्रतियोगिता की विजेता बनी। दिनेश सुका को द्वितीय पुरस्कार तथा हुलास ईश्वरी को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त प्रेरणा संध्या, याश्ना जोवता तथा शिक्षा धनपत को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। मंच-संचालन डॉ. अलका धनपत तथा श्री अरविन्द बिसेसर ने किया।

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता के प्रतिभागी

11 सितंबर को भारतीय अध्ययन संकाय के प्रांगण में छात्रों द्वारा नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, डॉ. (श्रीमती) नूतन पाण्डेय उपस्थित रहीं। डॉ. अलका धनपत, श्री केवल नायेक और विशेष सदस्य श्री आशीष बिसुनदयाल निर्णायक मंडल के सदस्य रहे। बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र इस प्रतियोगिता के विजेता बने और प्रथम दो पुरस्कार इसी कक्षा की दो टीमों को प्राप्त हुए। बी.ए. तृतीय वर्ष की टीम तीसरे स्थान पर आई। दिनेश सुका और सोनम सुरूप श्रेष्ठ अभिनेता व अभिनेत्री तथा मोनिश्ता रामनाथ और जोशिता घर्भरन सहायक अभिनेत्री घोषित हुए। इस अवसर पर एम.जी.आई. की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकान्ति गयान की उपस्थिति रही।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

एम.जी.आई. के प्रांगण में अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

12 सितंबर को अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के लिए शब्द खेल राउंड, धुन राउंड, अनुवाद राउंड, क्विज़ राउंड, डम्ब शराद, रीमिक्स राउंड आदि में कई टोलियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मॉरीशस के लोक गीत 'गीत गवाई' को यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्ति के उपलक्ष्य में विभाग ने प्रतियोगिता में लोक गीत राउंड भी शामिल किया। प्रथम पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष की आबाना येश्ना, डोमी आंशी और सीराज वेदिता को, द्वितीय पुरस्कार टी.डी.पी. के छात्रों को तथा तृतीय पुरस्कार भारतीय दर्शन के छात्रों को प्राप्त हुए। इस प्रतियोगिता में छात्रों के अतिरिक्त कई प्राध्यापकों तथा संस्थान के कर्मचारियों व संस्थान के बाहर के लोगों ने भी भाग लिया।

श्रुतलेख तथा पोस्टर प्रतियोगिता

हिंदी सप्ताह के उपलक्ष्य में श्रुतलेख तथा पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया था। श्रुतलेख प्रतियोगिता हेतु स्नातक स्तर पर प्रथम स्थान रामलगन प्रीति (टी.डी.पी), द्वितीय स्थान सुकाली जया देवी (बी.ए. तृतीय वर्ष) एवं तृतीय स्थान दोमा हंशा (बी.ए. तृतीय वर्ष) को प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर स्तर पर कैडू शरवानी (पी.जी.सी.ई) को प्रथम स्थान, धनपत शिक्षा (एम.ए.) को द्वितीय स्थान एवं चेदी लक्ष्मी (एम.ए.) को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

पोस्टर प्रतियोगिता में 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का केंद्रीय विषय 'मॉरीशस की स्वतंत्रता के 50 वर्ष और हिंदी भाषा' रहा। इस प्रतियोगिता में भी हिंदी विभाग के अलावा अन्य विभागों के छात्रों ने भाग लिया। प्रथम पुरस्कार टी.डी.पी. की महादू सविता, द्वितीय पुरस्कार बी.ए. हिंदी प्रथम वर्ष की जोवाता याश्ना तथा प्रोत्साहन पुरस्कार टी.डी.पी. की धन्नू शेषना और कला विभाग की नीतुषा को प्राप्त हुआ।

पुरस्कार–वितरण–समारोह

पुरस्कार-वितरण-समारोह के अंतर्गत 'युवाज़' पत्रिका का लोकार्पण

हिंदी सप्ताह की गतिविधियों का समापन 14 सितंबर को पुरस्कार-वितरण-समारोह के साथ हुआ। श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने स्वागत-वक्तव्य देते हुए विभिन्न गतिविधियों में युवकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी पर प्रसन्नता व्यक्त की। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर तथा भारत के ग्रामीण विकास राज्य मंत्री माननीय श्री महेंद्र सिंह उपस्थित रहे। महामहिम श्री अभय ठाकुर ने हिंदी की प्रगति हेतु विभिन्न संस्थाओं के कार्यों को सराहा तथा विश्व हिंदी सचिवालय के भवन-निर्माण पर संतोष व्यक्त करते हुए हिंदी संबंधी गतिविधियों में अभिवृद्धि की संभावनाओं की चर्चा की। साथ-साथ उन्होंने अगले वर्ष होनेवाले विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन हेतु समिति-गठन और सम्मेलन के प्रबंध संबंधी विभिन्न कार्यों के आरंभ होने का संकेत किया। माननीय श्री महेंद्र सिंह ने मॉरीशस में हिंदी दिवस में भाग लेने के सुअवसर पर हर्ष व्यक्त करते हुए हिंदी के सौंदर्य और अद्भुत विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी के विश्व भाषा होने के महत्व को उजागर किया तथा भारत और मॉरीशस के घनिष्ठ संबंधों में निरंतर वृद्धि की आशा व्यक्त की। संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकान्ति गयान ने कहा कि हिंदी सप्ताह की गतिविधियों के कारण महात्मा गांधी संस्थान के वातावरण में रौनक आ गई। संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल तथा परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण मीतू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा 'युवाज़' पत्रिका का विमोचन भी किया गया। समापन-समारोह का मंच-संचालन डॉ. धनपत तथा डॉ. गुदारी ने किया और धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. धनपत ने किया।

साभार : 'युवाज़' – युवा की आवाज़

हिंदी दिवस 2017 : विश्व भर में

बर्लिन, जर्मनी

14 सितंबर, 2017 को भारतीय दूतावास, बर्लिन, जर्मनी में हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में राजदूत महामहिम श्रीमती मुक्ता दत्ता तोमर की उपस्थिति रही। टैगोर संस्थान की निदेशक श्रीमती मंजिष्ठा मुखर्जी भट्ट ने गृह मंत्री माननीय श्री राजनाथ सिंह के हिंदी दिवस संदेश को पढ़ा। समारोह के दौरान अधिकारियों ने स्वरचित कविताएँ प्रस्तुत कीं एवं गद्य-पाठ किया।

साभार : भारतीय दूतावास, बर्लिन, जर्मनी का फ़ेसबुक पृष्ठ

कैंडी

31 अगस्त-14 सितंबर, 2017 को हिंदू सांस्कृतिक केंद्र में भारतीय सहायक उच्चायोग, कैंडी के भारतीय कला केंद्र द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत श्रुतलेख, अनुवाद, निबंध, भाषण, लघुकथा आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें सहायक उच्चायोग, कैंडी के भारतीय अधिकारियों तथा स्थानीय कर्मचारियों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय प्रांत के मुख्य मंत्री माननीय श्री सरत एकनायक रहे, जिन्होंने हिंदी फ़िल्मों के प्रभाव के बारे में बात की। सबरागमुवा विश्वविद्यालय के वरिष्ठ हिंदी व्याख्याता डॉ. संगीत रथनायक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जिन्होंने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के पाठ्यक्रम को भारतीय कला केंद्र में पढ़ाने की योजना की घोषणा की। भारत की सहायक उच्चायुक्त श्रीमती राधा वेंकटरामन ने कैंडी में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी शिक्षकों, संस्थाओं आदि के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान स्थानीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सम्मानित किया गया।

साभार : भारतीय कला केंद्र, भारतीय सहायक उच्चायोग कैंडी

कीव, युक्रेन

15 सितंबर, 2017 को भारतीय दूतावास, कीव, युक्रेन में हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। समारोह के दौरान हिंदी में कविता-पाठ किया गया। इस अवसर पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता व कविता-पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में दूतावास के सभी सदस्यों व टैरस शेवचेंको नेशनल यूनिवर्सिटी ऑव कीव तथा कीव नेशनल लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी के हिंदी छात्रों व अध्यापकों की उपस्थिति रही।

साभार : भारतीय दूतावास, कीव, युक्रेन का वेबसाइट

मालदीव

14 सितंबर, 2017 को भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, माले, मालदीव में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राजदूत महमहिम श्री अखिलेश मिश्र रहे, जिन्होंने भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के महत्व पर बल दिया तथा भारतीय युवा पीढ़ी को हिंदी की भाषाई व साहित्यिक विरासत की समृद्धि पर गर्व का अनुभव होने पर ज़ोर दिया। समारोह में ज़्यादातर भारत के अहिंदी-भाषी प्रांतों के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी कविता-पाठ, गीत, भाषण तथा अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। सभी प्रतिभागियों को राजदूत द्वारा प्रमाण-पत्र दिए गए। समारोह में लगभग 150 लोग उपस्थित थे।

साभार : भारतीय दूतावास, माले, मालदीव वेबसाइट तथा राजदूत श्री अखिलेश मिश्र का फ़ेसबुक पृष्ठ

मॉस्को

22 सितंबर, 2017 को मॉस्को के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास मॉस्को द्वारा दुर्गाप्रसाद धर सभागार में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजदूत महामहिम श्री पंकज सरन थे, जिन्होंने अपने वक्तव्य में रूस में हिंदी के प्रति सहृदयता की भावना को सराहा तथा रूस में स्थित शिक्षण संस्थानों की प्रशंसा करते हुए हिंदी को रूस और भारत के बीच सांस्कृतिक सेतु के रूप में रेखांकित किया। कार्यक्रम में भाषाविद् इंदिरा गाज़िएवा, प्रोफ़ेसर ल्युदमिला खोखलोवा, कज़ान विश्वविद्यालय से डॉ. दिमित्री, 'दिशा' के संस्थापक डॉ. रामेश्वर सिंह और 'हिंदुस्तानी समाज' के अध्यक्ष श्री कश्मीर सिंह उपस्थित थे। जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के रूसी विद्यार्थियों द्वारा 'रूस में दो साल' नाटक का मंचन हुआ। इसके अतिरिक्त छात्रों ने हिंदी गीत गाए, कबीर व रहीम के दोहे प्रस्तुत किए तथा कविता-पाठ किया। इस अवसर पर रूसी भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' की ओर से रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय की हिंदी प्राध्यापिका डॉ. इन्दिरा गाज़िएवा को तथा कज़ान विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक तथा अनुवादक प्रो. दिमित्री वोब्कोव को 'हिंदी मित्र' पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. अनूपा आर्य की पुस्तक का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिये गए। इस अवसर पर 150 से अधिक रूसी-भारतीय हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। मंच-संचालन डॉ. मीनू शर्मा ने किया।

डॉ. मीनू शर्मा की रिपोर्ट

पर्थ, ऑस्ट्रेलिया

16 सितंबर, 2017 को पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के हिंदी समाज तथा पर्थ के भारतीय महावाणिज्यदूतावास द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। जंदकोट के एम.एल.ए. श्री याज़ मुबारकाई तथा महावाणिज्यदूत श्री अमित कुमार मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर कई कवियों द्वारा कविता-पाठ तथा पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतियाँ हुईं, जिनके लिए उनको प्रमाण-पत्र दिए गए। लगभग 140 लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

साभार : भारतीय दूतावास, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया का फ़ेसबुक पृष्ठ

शंघाई

14 सितंबर, 2017 को भारतीय वाणिज्य दूतावास, शंघाई द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। चीनी संकाय के हिंदी विभाग से सुश्री युतोंग ज़ांग मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस अवसर पर भाषण, गीत-गायन तथा कविता-पाठ आदि गतिविधियों का आयोजन किया गया। उद्घाटन के दौरान महावाणिज्यदूत, महामहिम श्री प्रकाश गुप्त ने उपस्थित सभी लोगों को अपने दैनिक जीवन में हिंदी का प्रयोग करने का अनुरोध किया व कहा कि यह विदेश में पढ़नेवाले उन भारतीय बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, जो अहिंदी भाषी वातावरण में रहते हैं। साथ-साथ उन्होंने प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना की। समारोह के दौरान छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, शंघाई का वेबसाइट

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

17 सितंबर, 2017 को भारतीय महावाणिज्यदूतावास, सिडनी व इंडो-ऑस्ट्रेलियन बालभारती विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दोनों देशों के राष्ट्रगान व दीप-प्रज्ज्वलन से हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि महावाणिज्यदूत बी. वनलालवौना रहे, जिन्होंने कार्यक्रम के आयोजकों को बधाई दी तथा बच्चों को प्रोत्साहित किया। साथ-साथ बहुसांस्कृतिकता मंत्री श्री रे विलियम्स ने बताया कि सरकार भी भाषाओं को प्रोत्साहन देने हेतु प्रतिबद्ध है। इंडो-ऑस्ट्रेलियन बालभारती विद्यालय की संस्थापिका श्रीमती माला मेहता ने हिंदी की बढ़ती महत्ता पर बल दिया तथा हिंदी को स्कूलों के मुख्य पाठ्यक्रम में शामिल करवाने में प्रयासरत होने की बात कही। इस अवसर पर छात्रों ने 'चूं-चूं का मुरब्बा' नामक नाटक मंचन व कविता-पाठ किया।

साभार : एस.बी.एस.कॉम

टोरंटो, कनाडा

16 सितंबर, 2017 को अखिल विश्व हिंदी समिति द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लखनऊ के महापौर श्री दादू गुप्त एवं टोरंटो की सिनेटर आशा सेठ थे तथा अध्यक्षता श्री गोपाल बघेल ने की। समारोह में प्रयागराज इलाहाबाद से डॉ. शिवराम मौर्य और भोपाल से डॉ. जयराम आनंद उपस्थित थे। श्री दादू गुप्त ने कनाडा में हिंदी के विकास का आदि इतिहास बताते हुए एक गीत सुनाया तथा आशा सेठ ने अपने भाषण के बाद स्वरचित कविता-पाठ किया। लगभग 40 कवियों ने कविता-पाठ किया। समारोह में अमेरिका व टोरंटो के उपनगरों से अनेक गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

डॉ. रत्नाकर नराले की रिपोर्ट

वेंकूवर, कनाडा

14 सितंबर, 2017 को भारतीय महावाणिज्यदूतावास, वेंकूवर में हिंदी साहित्यिक समाज बी.सी. तथा राइटर्स इंटरनेशनल नेटवर्क, कनाडा के संयुक्त सहयोग से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का परिचय राजदूत श्रीमती आभा गोसैन ने दिया तथा महावाणिज्यदूत श्रीमती अभिलाषा जोशी ने स्वागत-भाषण दिया। समारोह के दौरान हिंदी साहित्यिक समाज, बी.सी. की अध्यक्षा श्रीमती अर्चना हरीत, राइटर्स इंटरनेशनल नेटवर्क, कनाडा के अध्यक्ष श्री अशोक भार्गव, राजदूत अमरजीत सिंह, सी.जू.आई. से श्री सुदेश कुमार तथा हिंदी भाषा के जानकारों द्वारा हिंदी कविता व गद्य की प्रस्तुतियाँ हुईं। महावाणिज्यदूतावास द्वारा प्रतिभागियों को पुस्तकें भेंट की गईं। इस अवसर पर वेंकूवर के 30 से अधिक हिंदी समर्थक समारोह में उपस्थित थे।

साभार : भारतीय दूतावास, वेंकूवर का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्री लंका

13 सितंबर, 2017 को भारतीय उच्चायोग, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एवं कॅलणिय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में श्री लंका में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में ***'हिंदी ई-शिक्षण : अस्मिता और संभावनाएँ'*** विषयक 'भारत-श्री लंका हिंदी सम्मेलन 2017' का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि श्री लंका के भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री तरनजीत सिंह संधू तथा कॅलणिय विश्वविद्यालय, श्री लंका के उपकुलपति प्रो. डी. एम. सेमसिंह रहे। इस अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के तत्वावधान में निर्मित 'ई-प्रयास' ई-पत्रिका तथा वरिष्ठ प्रो. उपुल रंजित हेवावितानमगे द्वारा अनूदित दो ग्रंथों 'पाप-पुण्य एवं कुसल-अकुसल : एक परिचय' तथा 'हतरमं हंदिये हिटगत मिनिसा' का विमोचन किया गया।

द्वितीय सत्र में हिंदी विद्वानों द्वारा 'हिंदी ई-शिक्षण-अस्मिता और संभावनाएँ' विषय पर प्रस्तुतियाँ हुईं। डॉ. शिरीन कुरेशी सम्मेलन की सह-संयोजिका रहीं। मंच-संचालन कुमारी हसारा हिरिमुतुगॉड ने एवं धन्यवाद-ज्ञापन वरिष्ठ प्रो. उपुल रंजित हेवावितानमगे ने किया।

सुश्री रिद्मा निशादिनी लंसकार की रिपोर्ट

संगोष्ठी

मॉरीशस में 'नारी की एकरूपता की खोज' विषयक त्रिदिवसीय संगोष्ठी

1,2 तथा 3 सितंबर, 2017 को लेखिका संघ, नई दिल्ली, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारतीय उच्चायोग मॉरीशस, हिंदी स्पीकिंग यूनियन तथा आर्य सभा मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में '***नारी की एकरूपता की खोज***' विषय पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रथम दिवस – 1 सितंबर, 2017

उद्घाटन सत्र

संगोष्ठी का उद्घाटन दीप-प्रज्ज्वलन तथा स्वस्ति-वाचन से हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन रहीं। गोवा की राज्यपाल महामहिम डॉ. मृदुला सिन्हा ने अध्यक्षता की तथा डॉ. बिंदेश्वर पाठक, सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक एवं साहित्यकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर ने भी समारोह की शोभा बढ़ाई।

आरंभ में लेखिका संघ की अध्यक्षा डॉ. मधु पंत द्वारा विशिष्ट अतिथियों को लेखिका-सूत्र बांधा गया तथा शॉल से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों द्वारा माननीया डॉ. मृदुला सिन्हा कृत 'हिंदी भारत माँ की बिंदी' गीत की प्रस्तुति हुई।

माननीया श्रीमती मृदुला सिन्हा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नारी एकरूपता की परिकल्पना पर बात की। माननीया मंत्री, श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किया कि महिलाओं के लिए यह एक अवसर है, जिसमें वे अपनी कलम की शक्ति का प्रमाण दे सकती हैं तथा लेखन पर अपने विचार रख सकती हैं। साथ ही, उन्होंने 2018 में मॉरीशस में होनेवाले विश्व हिंदी सम्मेलन का उल्लेख किया। सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक एवं साहित्यकार डॉ. बिंदेश्वर पाठक ने नारी पर अपने अनुभव को साझा करते हुए उनके उत्थान पर बात की तथा महात्मा गांधी द्वारा छुआ-छूत की प्रथा के विरुद्ध अभियान पर चर्चा की।

कार्यक्रम के आरंभ में भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पाण्डेय ने स्वागत-वक्तव्य दिया तथा लेखिका संघ की अध्यक्षा डॉ. मधु पंत ने लेखिका संघ का परिचय दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों के हाथों श्रीमती मृदुला सिन्हा की पुस्तक 'सीता पुनि बोली' का श्रीमती कुमकुम झा द्वारा मैथिली अनुवाद, डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा कृत '*मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य*' और '*प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य*', डॉ. उदय नारयण गंगू की पुस्तक '*मॉरीशस की संस्कृति और साहित्य*' तथा लेखिका संघ की स्मारिका का लोकार्पण किया गया।

इस सत्र का संचालन श्रीमती संगीता सिन्हा ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. सुशील गुप्त ने किया।

द्वितीय सत्र – 'साहित्य और नारी'

द्वितीय सत्र में डॉ. नमिता पाण्डेय ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कई लेखकों के कथन को उद्धृत करते हुए विभिन्न शताब्दियों के स्त्री साहित्य का वर्णन किया।

सत्र के प्रारंभिक वक्तव्य में हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने हिंदी प्रचारिणी सभा के इतिहास पर बात की तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सभा व गिरमिटिया मज़दूरों के योगदान को उजागर किया। साथ-साथ उन्होंने प्रति वर्ष महिला को दिए जानेवाले सम्मान के बारे में भी बताया।

डॉ. मधु पंत ने '***बाल साहित्य–नारी सशक्तीकरण का आधार***' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए बताया कि नारी सशक्तीकरण हेतु भावी पीढ़ी के मन में उन संस्कारों को बचपन से आरोपित करना होगा, जिनसे नारी का सम्मान हो।

महात्मा गांधी संस्थान की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. अलका धनपत ने '***विदेशों में नारी साहित्य***' विषय पर बात की। उन्होंने गिरमिटिया मज़दूरों में नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला। साथ-साथ उन्होंने मॉरीशसीय संस्कृति को प्रस्तुत कर कई लेखकों के साहित्य में नारी चित्रण को रेखांकित किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफ़ेसर तथा लेखिका संघ की सचिव डॉ. सुशील गुप्त ने '***नारी अस्मिता–एक चुनौती***' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने '**मॉरीशसीय हिंदी कथाकार भानुमती नागदान का कथा–संसार**' विषय पर बात करते हुए मॉरीशसीय साहित्य के विभिन्न चरणों को रेखांकित किया तथा लेखिका स्व. भानुमती नागदान के लेखन-कार्य पर बात की।

सिंगापुर की वरिष्ठ मीडिया कर्मी व लेखिका संघ की सदस्या श्रीमती सुनंदा वर्मा ने '**नारी प्रेरणा द्वारा नारी सशक्तीकरण**' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी सशक्तीकरण के प्रेरणास्रोत के उदाहरण देकर कहा कि हमें रोल मॉडल्स की आवश्यकता है न कि प्रतिमाओं की।

महात्मा गांधी संस्थान व रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकांति गयान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी भाषा के उत्थान पर बात करते हुए कहा कि "मॉरीशस में हिंदी के विकास हेतु हमें अपने प्रयत्नों को जारी रखना चाहिए। महात्मा गांधी संस्थान विविध माध्यमों से हिंदी के प्रचार में योगदान दे रहा है।"

इस सत्र का संचालन डॉ. रश्मि शर्मा ने किया।

तृतीय सत्र – 'प्रवास और भारतीय अस्मिता'

इस सत्र में रामायण सेंटर की उपाध्यक्षा डॉ. विनोद बाला अरुण ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में गिरमिटिया मज़दूरों की व्यथा को दूर करने में रामचरितमानस की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने साहित्य में स्त्री की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा "***स्त्री ही मूलतः संस्कृति का पोषण करती है व संस्कारों की जननी है।***"

लेखिका संघ की उपाध्यक्ष, मनोवैज्ञानिक एवं वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती धीरा वर्मा ने '***प्रवासी पीड़ा और अंतर्द्वंद्व***' विषय पर गीतों के माध्यम से अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों का देश के नवनिर्माण में सहयोग की चर्चा की।

डॉ. नूतन पाण्डेय ने '***प्रवासी भारतीयों द्वारा अस्मिता की खोज में किए जा रहे साहित्यिक प्रयास***' पर बात करते हुए मॉरीशस में बसे हुए प्रवासियों का विशेष ज़िक्र किया।

महात्मा गांधी संस्थान की व्याख्याता डॉ. संध्या देवी अंचराज़-नवोसा ने '**स्वातंत्र्योत्तर प्रवासी कहानी साहित्य में नारी अस्मिता और उसका बदलता स्वरूप**' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर समाज के विकास, मॉरीशस की स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी और मॉरीशस में भारतवंशी नारी की यात्रा पर बात की तथा नारी को केंद्र में रखकर विभिन्न उद्धरणों से नारी की बदलती प्रवृत्ति का उल्लेख किया।

डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा ने हिंदी भाषा के प्रति बढ़ते लगाव पर अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी को देश की शक्ति बताया और कहा कि यही शक्ति विदेश में प्रवासी भारतीयों ने हिंदी द्वारा प्राप्त की।

अंत में श्रीमती सरोजीनी प्रीतम द्वारा कविता-पाठ हुआ। इस सत्र का संचालन क्षिप्रा भारती ने किया।

द्वितीय दिवस – 2 सितंबर, 2017

प्रथम सत्र – 'नारी सशक्तीकरण और नारी चेतना'

हिंदी संगठन, मॉरीशस के अध्यक्ष श्री राजनारायण गति ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में भारतीय तथा मॉरीशसीय समाज में भिन्नता को दर्शाया। उन्होंने हिंदी संगठन की गतिविधियों का परिचय देते हुए हिंदी के उत्थान में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया।

वरिष्ठ कवयित्री डॉ. मंजू गुप्ता ने '***विश्व में नारी चेतना के स्वर***' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्य की अनेक विधाओं में नारी की उपस्थिति है, क्योंकि नारी के संबंधों पर ही साहित्य आधारित होता है। उन्होंने पितृसत्तात्मक सत्ता में नारी की स्थिति तथा आज की नारी में चेतना के उभरते स्वर का उल्लेख किया।

आई.सी.सी.आर. चेयर, भारतीय दर्शन, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से प्रो. आभा सिंह ने *'नारी सशक्तीकरण : दशा और दिशा' पर बात करते हुए कहा "महिला की दशा उसकी दिशा का परिचायक हो या उसकी दशा उसकी दिशा का नियामक हो, यह आवश्यक नहीं है। लेकिन उसकी दशा उसकी दिशा की सूचक ज़रूर हो सकती है।"*

हिंदी शिक्षिका डॉ. रत्ना सुखलाल ने '***मॉरीशसीय कथा साहित्य में भारतवंशी श्रमिक नारी की यात्रा***' पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न कहानियों का उल्लेख कर श्रमिक नारी की पीड़ा व संघर्ष पर विजय की स्थिति को रेखांकित किया।

मैथिली साहित्यकार एवं लेखिका संघ की कोषाध्यक्ष श्रीमती कुमकुम झा ने '***भारतीय कवयित्रियों में साहित्य और संगीत का अंतर्संबंध***' विषय पर बात की। उन्होंने रामायण के दोहों व विभिन्न कविताओं के माध्यम से विषय को प्रस्तुत किया।

हरिकृष्ण देवसरे न्यास, दिल्ली की सचिव एवं बाल साहित्यकार श्रीमती क्षिप्रा भारती ने '***नारी सशक्तीकरण–एक आकलन***' विषय पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत करते हुए

नारी को स्वतंत्र होकर अपने अधिकार की लड़ाई लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की वरिष्ठ व्याख्याता एवं भाषा संसाधन केंद्र की अध्यक्षा सुश्री अंजलि चिंतामणि ने ***'मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी चिंतन'*** विषय पर बात की। उन्होंने मन्नू भंडारी के साहित्य को आधुनिक पीढ़ी के लिए मूल स्वर व संजीवनी बूटी बताया।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मीरा सीकरी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में नारी व पुरुष के महत्व के बीच संतुलन पर बात की। उन्होंने कहा कि *''इस सृष्टि का सर्वप्रथम प्राणी मनुष्य है और उस मनुष्य की दो इकाईयाँ हैं और दोनों इकाईयों की समानता ही सृष्टि के रहस्य को उद्‌घाटित करती है।''*

इस सत्र का संचालन डॉ. नमिता पाण्डेय ने किया।

द्वितीय सत्र – 'साहित्य की समृद्धि में लोक संस्कृति की भूमिका का मूल्यांकन'

आई.सी.सी.आर चेयर हिंदी, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से डॉ. उमेश कुमार सिंह ने विषय का परिचय देते हुए अपना प्रारंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने लोक साहित्य की सार्थकता को सिद्ध करते हुए, उसमें नारी की भूमिका को उजागर किया।

हिंदी स्पीकिंग यूनियन और सेवानिवृत्त व्याख्याता डॉ. श्रीमती मालती ओकल ने ***'मॉरीशसीय साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति'*** विषय पर बात करते हुए मॉरीशसीय लोक कथाओं का विवरण दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व वरिष्ठ एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. सरोज सक्सेना ने ***'साहित्य की समृद्धि में लोक साहित्य की भूमिका'*** *विषय पर बात की। उन्होंने कहा कि ''लोक साहित्य के अनुसंधान से साहित्य में धर्म, समाज, नीति और दर्शन का एक विशाल संसार उद्‌घाटित हो सकता है।''*

पाँचवा स्तम्भ, नई दिल्ली की संपादक श्रीमती संगीता सिन्हा ने ***'लोक साहित्य कितना सार्थक, कितना सामयिक'*** विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने समाज में समाहित समस्त लोक साहित्य की बात की। उन्होंने लोक साहित्य में महिलाओं के योगदान पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

वरिष्ठ अनुवादक व लेखिका संघ की सदस्य श्रीमती रिटू चक्रवर्ती ने **'सामाजिक उत्थान में महिला साहित्यकारों का चिंतन'** विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने विभिन्न साहित्यकारों का उल्लेख कर महिला रचनाकारों की लेखन-शक्ति के ज़रिए समाज के उत्थान की चर्चा की।

मॉरीशस भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की अध्यक्षा डॉ. सरिता बुद्धू ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लोक गीतों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गीत गवाय को यूनेस्को में शामिल होने और अंततः भोजपुरी का विश्व पटल पर सुरक्षित होने की बात की।

तृतीय सत्र – कवि-सम्मेलन – 'नारी चेतना के उभरते स्वर'

कवि-सम्मेलन में भारतीय तथा मॉरीशसीय कवयित्रियों ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया। गोवा की राज्यपाल माननीया डॉ. श्रीमती मृदुला सिन्हा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए अपने अनुभव को श्रोताओं के साथ साझा किया व कविता-पाठ किया। इस सत्र का संचालन निशा भार्गव ने किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर ने भारतीय संविधान के प्रावधान के तहत मॉरीशसीय नागरिकों के लिए ओ.सी.आई. कार्ड की सुविधा का उल्लेख किया। साथ ही 3 मॉरीशसीय नागरिकों को ओ.सी.आई. कार्ड प्रदान किया गया।

तृतीय दिवस – 4 सितंबर, 2017

समापन-सत्र

समापन-सत्र के मुख्य अतिथि आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान डॉ. उदय नारायण गंगू रहे तथा अध्यक्षता गोवा की राज्यपाल माननीया डॉ. श्रीमती मृदुला सिन्हा ने की। डॉ. सुशील गुप्त ने इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी की उपलब्धियों का आकलन किया। इसके बाद महात्मा गांधी संस्थान की वरिष्ठ प्रवक्ता डॉ. राजरानी गोबिन ने मॉरीशसीय प्रतिनिधि के रूप में संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने मॉरीशस में भी एक लेखिका संघ की स्थापना करने का सुझाव दिया।

लेखिका संघ की अध्यक्षा, डॉ. मधु पंत ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में संगोष्ठी से संबंधित अपने विचारों की अभिव्यक्ति की। उन्होंने गीत के द्वारा इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी को तीन टेलीग्राफ़ में समेटा। तत्पश्चात् भारत की ओर से श्रीमती सरोजिनी प्रीतम तथा डॉ. मंजु गुप्ता एवं मॉरीशस की ओर से श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी ने कविता-पाठ किया।

मुख्य अतिथि डॉ. उदय नारायण गंगू ने सभी वक्ताओं के विषयों पर अपने विचार प्रकट किए तथा मॉरीशस में हिंदी के विकास को प्रभावित करनेवाले तथ्यों की विवेचना की। उन्होंने अपनी मॉरीशसीय यात्रा के दौरान महात्मा गांधी द्वारा दिए गए तीन मंत्रों का उल्लेख किया : ***'अपने बच्चों को पढ़ाना, राजनीति में रुचि लेना तथा भारत को न भूलना। इन तीन मंत्रों को हमारे पूर्वजों ने अपनाया और देश में परिवर्तन आया।''***

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में माननीया डॉ. मृदुला सिन्हा ने कहा कि हम सबका दायित्व बनता है कि हम सकारात्मक साहित्य लिखें। साथ-साथ उन्होंने नारी तथा पुरुष के बीच परस्पर सहयोग की आवश्यकता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए लेखिका संघ के विषय में कहा : ***'लेखिका संघ ही अपने आप में अर्धनारीश्वर का रूप है। लेखिका महिला है और संघ पुरुष है।''***

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर ने सभी को बधाई देते हुए भारत द्वारा कई परियोजनाओं के शुरू होने का संकेत किया और मॉरीशस को भारतीय सरकार के निरन्तर सहयोग का आश्वासन दिया।

लेखिका संघ की उपाध्यक्षा श्रीमती धीरा वर्मा ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

'हिंदी और प्रवासी भारतीय' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

27 सितंबर, 2017 को सोनुभाऊ बसवंत कॉलिज, शहापुर के हिंदी विभाग एवं आई.क्यू.ए.सी. के संयुक्त तत्वावधान में ***'हिंदी और प्रवासी भारतीय'*** विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री किशोर कुडव ने की, जिन्होंने संगोष्ठी की उपलब्धियों के साथ-साथ प्रवासियों की पीड़ा पर प्रकाश डाला। हिंदी सेवी संस्थान के निदेशक, व हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने उद्‌घाटक वक्तव्य देते हुए कहा कि भारत में तो हिंदी का काम हो ही रहा है, पर मॉरीशस भी हिंदी की सेवा में भारत से पीछे नहीं है। डॉ. विजय कुमार ने हिंदी की महत्ता को दर्शाते हुए प्रवासी लेखन व साहित्यकारों के प्रदेय की चर्चा की। प्राचार्य वी.एच. फुलझेले ने हिंदी और प्रवासियों के जीवन यथार्थ पर अपने विचार व्यक्त किए। इस संगोष्ठी में कई कॉलिजों के प्राध्यापकों व विद्यार्थियों ने अभिपत्र प्रस्तुत किए। समारोह का संचालन समन्वयक डॉ. अनिल ने किया।

साभार : हिंदी भवन

कादंबिनी क्लब की मासिक गोष्ठी व 'अंधेरे में : पुनर्पाठ' पुस्तक का लोकार्पण

17 जुलाई, 2017 को हिंदी प्रचार सभा परिसर में कादंबिनी क्लब हैदराबाद के तत्वावधान में क्लब की 300वीं मासिक गोष्ठी का आयोजन तथा 'अंधेरे में : पुनर्पाठ' पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. शुभदा वाजपेयी रहीं तथा श्री नीरज कुमार एवं श्री संतोष कुमार जैन विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. मदनदेवी पोकरणा ने की। इस दौरान संगोष्ठी के संयोजक श्री अवधेश कुमार सिन्हा ने कवि केदारनाथ सिंह पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। डॉ. गीता जांगिड़ ने कहानीकार, उपन्यासकार व नाटककार भीष्म साहनी की लेखन-शक्ति पर बात की। विशेष अतिथियों ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. अहिल्या मिश्र ने की तथा डॉ. नीरजा ने पुस्तक परिचय देकर कहा कि यह वर्ष गजानन माधव मुक्तिबोध के शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रो. शुभदा वाजपेयी ने पुस्तक का लोकार्पण किया। मीना मुथा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन सुनीता लुल्ला ने किया।

साभार: इ-पेपर स्वतंत्रवार्ता.कॉम

स्नेह-मिलन-गोष्ठी

26 जुलाई, 2017 को संस्कार भारती, रोहिणी ज़िला, दिल्ली की ओर से फ़िजी में भारत के भाषा और संस्कृति अधिकारी श्री अनिल जोशी के सम्मान में एक स्नेह-मिलन गोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के विशेष अतिथि श्री राजेश चेतन, श्री गजेंद्र सोलांकी, श्री नरेश शाण्डिल्य और श्री देवेंद्र खन्ना रहे तथा अध्यक्षता प्रख्यात गीतकार श्री बालस्वरूप राही ने की। गोष्ठी में अनेक कवियों तथा कवयित्रियों ने काव्य-पाठ किया। इस अवसर पर श्री अनिल जोशी ने फ़िजी के इतिहास तथा भारत से आए गिरमिटिया मज़दूरों की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती ऋतु गोयल ने किया।

श्री अनिल जोशी का फ़ेसबुक पृष्ठ

'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : सीमा और संभावनाएँ' विषयक संगोष्ठी

22 जुलाई, 2017 को प्रवासी भवन, नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् द्वारा **'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य : सीमा और संभावनाएँ'** विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व राजदूत तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र गुप्त ने किया। उन्होंने बताया कि विदेशों में भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। विश्व भाषा के रूप में स्वीकार्यता के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता मिले।

भारतीय उच्चायोग फ़िजी में हिंदी एवं संस्कृति के द्वितीय सचिव श्री अनिल शर्मा ने विदेशों में हिंदी के रचनात्मक लेखन में निरंतर वृद्धि पर बात की। प्रवासी संसार के संपादक श्री राकेश पाण्डेय ने हिंदी प्रदेश की बोलियों पर अपने विचार व्यक्त किए। बिरला फ़ाउंडेशन के निदेशक प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण ने विदेशों में हिंदी की उपयोगिता पर बात की। सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान डॉ. विमलेश कांति वर्मा ने अनेक देशों में अपने हिंदी अध्यापन के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाना आवश्यक है तथा हिंदी के नाम को लेकर एक सांस्कृतिक अभियान शुरू करना चाहिए। सुप्रसिद्ध हिंदी कवि प्रो. अशोक चक्रधर ने अपने वक्तव्य में कहा कि ***"हिंदी एक नहीं अनेक हिंदियाँ हैं, भारत में भी और विदेश में भी। साथ-साथ संगीत, सिनेमा और कवि-सम्मेलनों के कारण विश्व में हिंदी का प्रचार-प्रसार निरंतर बढ़ रहा है।"*** अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के महासचिव श्री श्याम परांडे ने विश्व में हिंदी की लोकप्रियता को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदी विदेशों में भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। परिषद् के निदेशक श्री नारायण कुमार ने कहा कि प्रवासी भारतीयों का विचार है कि हिंदी के कारण भारतीय संस्कृति विदेशों में जीवित है। उन्होंने यह सुझाव दिया कि विदेशों में काम करनेवाले हिंदी अधिकारियों और प्राध्यापकों को हिंदी प्रचारक के रूप में काम करना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् की रिपोर्ट

'मुंशी प्रेमचंद और हिंदुस्तान की 'गंगा-जमुनी तहज़ीब'' विषय पर संगोष्ठी

17 अगस्त, 2017 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के दयारे मीर-तकी-मीर हॉल में मुंशी प्रेमचंद जी के 136वें जन्मदिन के अवसर पर 'मुंशी प्रेमचंद और गंगा-जमुनी तहज़ीब' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. शामीम हन्फ़ी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में हयूमेनिटीज़ एंड लेंग्वेजर्स फ़ेकल्टी के डीन प्रो. वहाजउद्दीन अलवी उपस्थित थे। डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी और डॉ. जितेंद्र श्रीवास्तव ने मुंशी प्रेमचंद पर वक्तव्य दिया। इसके बाद प्रो. दानिश इक़बाल और डॉ. मोहम्मद काज़िम ने प्रेमचंद द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी 'कफ़न' का नाटकीय पाठ किया। प्रो. हेमलता महिश्वर ने छात्रों से प्रेमचंद की रचनाओं में दर्शित आपसी भाई-चारे को समझने पर ज़ोर दिया। कार्यक्रम का संयोजन हिंदी विभाग के प्राध्यापक एवं शायर डॉ. रहमान मुसव्विर तथा संचालन डॉ. ज़मररुद मुग़ल ने किया। धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. अतहर फ़ारूक़ी ने किया।

साभार : यूनिवर्सिटी सर्कल.इन

सम्मेलन

भारत में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

15 सितंबर, 2017 को दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर में स्थित श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलिज में हिंदी संगम फ़ाउंडेशन, भारत और यू.एस.ए. द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के सक्रिय सहयोग से ***'विश्व पटल पर हिंदी अध्यापन की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ'*** एवं संभावनाएँ' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में भारत और भारत से इतर हो रहे शोध-कार्यों और नई गतिविधियों को भारतीय अध्यापकों, शोधकर्ताओं के समक्ष प्रस्तुत करना और इस संबंध में निरंतर संवाद कायम करना है। समारोह की मुख्य अतिथि तथा प्रमुख वक्ता न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय की हिंदी प्राध्यापिका और ग्रियर्सन पुरस्कार विजेता प्रो. गाब्रिएला निक इलिएवा तथा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र रहे।

समारोह को तीन भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग में प्रो. गैब्रिएला निक इलेवा ने अपनी इंटरेक्टिव शैली में भाषा-शिक्षण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए 100 प्रतिभागियों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने कहा कि शिक्षा का सीधा संबंध सामाजिक और आर्थिक स्थिति से है। इस कार्यशाला में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश के विद्यालयों और महाविद्यालयों में कार्यरत हिंदी शिक्षक, पी.एच.डी शोधार्थी और स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थी शामिल थे।

दूसरे भाग का उद्घाटन भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् की महानिदेशक राजदूत श्रीमती रिवा गांगुली दास द्वारा किया गया, जिन्होंने हिंदी शिक्षण को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए आधुनिक तकनीक और शिक्षण पद्धतियों को प्रयोग में लाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। हिंदी संगम फ़ाउंडेशन के सभापति पद्म भूषण आचार्य लक्ष्मी प्रसाद यरलागड्डा ने अहिंदी-भाषी क्षेत्रों में शिक्षार्थियों की समस्याओं के अनुरूप प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी शिक्षा को समग्र विश्व में विस्तारित करने की बात कही। कॉलिज के प्राचार्य डॉ. जसविंदर सिंह तथा अन्य अतिथियों ने हिंदी शिक्षण को समृद्ध बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने विश्व पटल पर हिंदी शिक्षण को बढ़ावा देने हेतु विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा की जानेवाली विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए पूरी दुनिया में हिंदी की प्रगति से जुड़े विद्वानों को पुरस्कृत करने और विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ स्थापित करने की दिशा में प्रयत्नशीलता की आवश्यकता पर बल दिया।

तीसरे भाग में 4 समान्तर सत्र आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य हिंदी शिक्षण के अनेक पहलुओं पर विशेषज्ञों की विचाराभिव्यक्ति रही। प्रथम सत्र का विषय 'सक्षम संसाधन निर्माण और उच्च स्तरीय हिंदी कार्यक्रमों का विकास' रहा, जिसमें प्रो. मिश्र ने उच्च स्तरीय हिंदी पाठ्यक्रम के निर्माण में सचिवालय द्वारा किए जाने वाले कार्यों का उल्लेख किया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. जसविंदर सिंह ने महाविद्यालय में आधुनिक शिक्षा पद्धति को अपनाने हेतु उठाए जा रहे कदम का उल्लेख किया।

द्वितीय सत्र का विषय 'हिंदी भाषा और संस्कृति शिक्षण के प्रति अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से युक्त दृष्टिकोण' रहा, जिसके दौरान डॉ. प्रकाश हिंदुस्तानी और बैंक ऑव बड़ौदा से डॉ. जवाहर कर्णावट ने तकनीक और प्रौद्योगिकी के प्रयोग से हिंदी को समृद्ध करने संबंधी अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र का विषय 'उच्च स्तरीय हिंदी भाषा और संस्कृति प्रवीणता के लिए शिक्षण-नीति' रहा, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति-कुलपति डॉ. सुधीश पचौरी ने हिंदी-शिक्षण में भाषागत समस्याओं पर चर्चा करते हुए भाषा-विज्ञान में नए शोध करने पर ज़ोर दिया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. इलिएवा ने किया।

चौथे सत्र का विषय 'संस्थागत रचनाशीलता एवं सहभागिता' रहा। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए स्टारटॉक, अमेरिका के निदेशक श्री अशोक ओझा ने हिंदी संगम फ़ाउंडेशन और युवा हिंदी संस्थान द्वारा चलाए जा रहे त्वरित हिंदी पाठ्यक्रमों की चर्चा करते हुए दोनों संस्थाओं को विश्वविद्यालय स्तर पर भाषा-विशेषज्ञों के साथ मिलकर शिक्षण-प्रशिक्षण और सामग्री-निर्माण के कार्यों पर बल दिया। लार्सन एंड टूब्रो के संचार निदेशक श्री जयराम मेनन ने बहुराष्ट्रीय उद्योगों में हिंदी के प्रयोग को उपयोगी बताया।

समापन-समारोह हिंदी संगम फ़ाउंडेशन के संरक्षक राजदूत श्री ज्ञानेश्वर मुले की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस दौरान समारोह के मुख्य संयोजक श्री अशोक ओझा द्वारा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच (कंसोर्टियम) के गठन के प्रस्ताव को पारित किया गया। प्रो. इलिएवा ने कंसोर्टियम को 21वीं सदी की शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयोगी बताया जब कि प्रचार्य डॉ. जसविंदर सिंह ने इस प्रस्ताव हेतु अपने समर्थन की घोषणा की। इस अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

श्री अशोक ओझा की रिपोर्ट

लंदन में अंतरराष्ट्रीय विराट कवि-सम्मेलन, 2017

23 अगस्त-3 सितंबर, 2017 को भारतीय उच्चायोग और आई.सी.सी.आर. के तत्वावधान में इंडियन कम्यूनिटी सेंटर, बेलफ़ास्ट द्वारा स्थानीय हिंदू मंदिर के प्रांगण सहित ब्रिटेन के विभिन्न भागों में अंतरराष्ट्रीय विराट कवि-सम्मेलन, 2017 का आयोजन किया गया। भोपाल से श्री पवन जैन ने समसामयिक विषयों आतंकवाद, खेल, पुलिस के जीवन आदि पर कविता-पाठ किया, क्रांति धरा मेरठ से आई श्रीमती तुषा शर्मा ने श्रृंगार और प्रेम के गीत गाए, रोहतक के डॉ. जगवीर राठी ने हास्य-व्यंग और हरियाणा के लोकजीवन पर आधारित कविताएँ पढ़ीं, दिल्ली के श्री चरणजीत चरण ने राष्ट्र चेतना के गीत गाए, उज्जैन से आए श्री दिनेश दिग्गज ने हास्य-व्यंग की क्षणिकाएँ सुनाईं तथा कोलकाता से श्रीमती ज़रीना खातून ने उर्दू में गज़ल गान किया। कवियों ने बेलफास्ट के अतिरिक्त स्लाव, स्विडन, बर्मिंघम, मैनचेस्टर, लिवरपूल, कार्डिफ़, इंडिया हाउस, साउथ हॉल (मिडलसेक्स) में आयोजित कवि-सम्मेलनों में भी अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संयोजक श्री के.बी.एल. सक्सेना और श्री तरुण कुमार रहे।

श्री तरुण कुमार की रिपोर्ट

टोरंटो में विश्व कवि सम्मेलन तथा अष्टम वार्षिक अधिवेशन

16 सितंबर, 2017 को सिंधी गुरु मंदिर के सभागार, टोरंटो में अखिल विश्व हिंदी समिति द्वारा विश्व कवि सम्मेलन तथा अष्टम वार्षिक अधिवेशन का आयोजन किया गया। विश्व हिंदी समिति के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दाऊजी गुप्त ने समारोह की अध्यक्षता की तथा कनाडा सीनेटर डॉ. आशा सेठ, भारतीय कोंसल श्री देवेंद्रपाल सिंह तथा डॉ. अरुण सेठ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रमुख प्रवक्ता श्री दाऊ गुप्त ने कनाडा की अपनी पचासों वर्ष पूर्व की यात्राओं की विस्तृत चर्चा कर हिंदी के विकास व इतिहास पर बात की। इसके उपरान्त विभिन्न सत्रों में 25 प्रमुख कवियों ने अपनी रचानाएँ सुनाईं। कनाडा की सीनेटर डॉ. आशा सेठ व डॉ. अरुण सेठ ने साहित्यकारों को हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए सराहा व अपनी 2 रचनाएँ सुनाईं। कोंसल श्री देवेंद्रपाल सिंह ने भारतीय कौंसलावास की ओर से हिंदी के विकास व उन्नयन हेतु हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री देवेंद्रपाल सिंह, डॉ. दाऊजी गुप्त व संस्था के अध्यक्ष श्री गोपाल बघेल 'मधु' के हाथों समिति की ओर से डॉ. कैलाश भटनागर को 'साहित्य शिरोमणि', श्री सरन घई को 'साहित्य सुधाकर', श्री विजय सूरी को 'साहित्य मणि' व डॉ. जय राम आनंद को 'साहित्य शशि सम्मान' प्रदान किया गया। साथ-साथ श्री देवेंद्रपाल सिंह को 'साहित्य उत्प्रेरक सम्मान' से सम्मानित किया गया। समारोह का संचालन श्री गोपाल बघेल मधु ने किया।

श्री गोपाल बघेल 'मधु' की रिपोर्ट

अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन

17 सितंबर, 2017 को हिंदी भवन, कालपी में हिंदी पखवाड़ा एवं विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ज़िले के अपर पुलिस अधीक्षक श्री सुरेंद्रनाथ तिवारी रहे। समारोह के दौरान युवा कवि श्री अभिषेक अनंत ने देशभक्ति की रचनाएँ सुनाईं, शीतल बाजपेयी ने गज़ल-गान किया, कवयित्री निधि सिन्हा निदा ने काव्य-पाठ किया, कवि ओमप्रकाश यति ने सामाजिक मुद्दों पर आधारित कई रचनाएँ सुनाईं व श्री सत्य चन्दन तथा ममता किरण ने शेर सुनाया। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र नाथ तिवारी तथा डॉ. अरुण मेहरोत्रा ने सभी कवियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन व्यंग्यकार श्रवण शुक्ल ने किया।

निधि सिन्हा निदा के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

त्रिभाषीय कवि-सम्मेलन

12 अगस्त, 2017 को कालीदास प्रेक्षागृह, विरसा विहार केंद्र, पटियाला में उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा साहित्य संगम के सहयोग से त्रिभाषीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री मनमोहन सहगल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे तथा अध्यक्षता श्री मनमोहन सिंह ने किया। स्वतंत्रता दिवस को समर्पित इस कवि-सम्मेलन में कई रचनाकारों ने सामाजिक तानेबाने, सियासत, रिश्तों में स्वार्थ व सांस्कृतिक बिखराव पर बात की। हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादमी के निदेशक अश्वनी गुप्त ने सेनानियों के बलिदान पर बात की। हिंदी के गीतकार टेकचंद्र अत्री ने अपनी एक रचना के माध्यम से सैनिक की व्यथा को उजागर किया। समारोह का संचालन प्रो. सतीश वर्मा ने किया

साभार : इ-पेपर दैनिक जागरण

कार्यशाला/परिचर्चा/जयंती

गूगल द्वारा कार्यशाला का आयोजन

14 जुलाई, 2017 को लखनऊ में गूगल ने हिंदी भाषा में अपनी सेवाओं को बहतर बनाने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का आयोजन किया। समारोह में हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' के मैनपुरी संस्करण के ब्यूरो चीफ़ श्री हृदयेश सिंह ने क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध जानकारियों को गूगल पर लाने में आ रहीं चुनौतियों पर बात करते हुए कहा कि हिंदी भाषा में गूगल के पास सीमित सामग्री है। इसलिए क्षेत्रीय साहित्य, संस्कृति, भाषा, तकनीक आदि को गूगल पर लाना होगा तथा उन्होंने कई सुझाव दिए। साथ-साथ गूगल से जुड़े गैरी ने ब्लॉग और वेबसाइट को गूगल रैंकिंग में शामिल कराने के तरीकों के बारे में जानकारी दी। समारोह में देश भर के हिंदी ब्लॉगर और इंटरनेट पर हिंदी भाषा के जानकारों ने भाग लिया।

साभार : हिंदीमीडिया.इन

मुंबई में बैंक ऑव बड़ौदा द्वारा 'सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग' विषयक कार्यशाला

19 अगस्त, 2017 को बैंक ऑव बड़ौदा के कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में बैंक ऑव बड़ौदा एवं मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग' विषय पर हिंदी प्राध्यापकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता के रूप में माइक्रोसॉफ़्ट एवं सी-डैक, पुणे के पूर्व भाषा सलाहकार डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा एवं विशिष्ट अतिथि के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली के निदेशक डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण उपस्थित रहे। प्रथम सत्र में महाप्रबंधक (राजभाषा), श्री राधाकांत माथुर ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में उपस्थित मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. विष्णु सरवदे ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर बात की। बैंक के कार्यपालक निदेशक ने अपने वक्तव्य में हिंदी को सरल और मधुर भाषा बताते हुए कहा कि हिंदी हमारे सभी विचारों एवं भावनाओं को आसानी से व्यक्त कर सकती है। डॉ. मल्होत्रा ने तकनीक में हिंदी के प्रयोग के सभी आधुनिक आयामों से सबको अवगत कराया, जिनमें यूनिकोड के माध्यम से हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में टाइपिंग एवं गूगल वॉयस टाइपिंग की व्यावहारिक जानकारी दी तथा वर्तमान युग में हिंदी टाइपिंग को लेकर बन रहे टूल्स जैसे लीला, इ-पाठशाला, भारत कोश, कविता कोश आदि पर बात की। डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने

कहा कि तकनीक के आने से कई कार्य सरल हुए हैं, परंतु इसकी अधिकता एवं दुरूपयोग से भी सावधान रहना चाहिए।

समापन-सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने हिंदी के तकनीकी रूप को सक्षम बनाने पर बल दिया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन बैंक के उप महाप्रबंधक डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया एवं आभार-प्रदर्शन मुख्य प्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया।

श्री अम्बरीश रंजन कुमार की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित त्रैमासिक कार्यक्रम विचार मंच : "मोहन राकेश तथा 'आधे-अधूरे' का शिक्षण"

27 जुलाई, 2017 को स्वराज भवन, लालमाटी, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में"मोहन राकेश तथा 'आधे-अधूरे' का शिक्षण" विषय पर विचार-मंच का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान के पूर्व एसोसिएट प्रो. डॉ. संयुक्ता भोवन-रामसारा मुख्य वक्ता रहीं। शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय के प्रबंधक, श्री राजीव कुमार ओखोजी, कला एवं संस्कृति मंत्रालय के कला अधिकारी, श्री राकेश श्रीकिसुन, मणिलाल डॉक्टर एस.एस.एस. के हिंदी शिक्षक, श्री लेखराजसिंह पांडोही तथा बी.ए. हिंदी की छात्रा सुश्री प्रियंका सुखलाल ने भी कार्यक्रम में अपने वक्तव्य दिए।

सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों, अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों एवं छात्रों का स्वागत किया और यह कहा कि '***नाटक वह विधा है, जो जन-मानस तक सीधे पहुँचती है***'।

श्री राजीव कुमार ओखोजी ने अपने वक्तव्य में शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपने छात्रों को साहित्य पढ़ने हेतु प्रेरित करें, क्योंकि भाषा और साहित्य का गहरा संबंध है। उन्होंने कहा कि 'विचार-मंच के इस आयोजन के बाद मुझे विश्वास है कि छात्र नाटकों में अधिक से अधिक रुचि दिखाएँगे।'

श्री राकेश श्रीकिसुन ने 'आधे-अधूरे' नाटक की रंगमंचीयता पर अपने विचार व्यक्त किए तथा अभिनय पर बात करते हुए कहा कि 'अभिनय के लिए प्रत्येक पात्र अपने शारीरिक अंगों, अपनी आवाज़ तथा अपने मन का प्रयोग करता है। नाटक में अनेक रस पाए जाते हैं, जो अभिनय के दौरान अभिव्यक्त होते हैं। 'आधे-अधूरे' नाटक में साधारण प्रकाश की ज़रूरत है।' अंत में उन्होंने कहा कि भारत में और अन्य देशों में 'आधे-अधूरे' नाटक का मंचन कई बार हुआ तथा रंगमंच की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ नाटक है।

कार्यक्रम के अंतर्गत 'नाट्य दीप' द्वारा 'आधे-अधूरे' नाटक के प्रारंभिक भाग का मंचन हुआ। इसके बाद मुख्य वक्ता डॉ. संयुक्ता भोवन-रामसारा ने 'आधे-अधूरे' पर शोधपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने सर्वप्रथम मोहन राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला और नाटक के मुख्य पात्रों के चरित्रों का विश्लेषण किया। उन्होंने कहा कि '***अव्यवस्थित, विशृंखल जीवन के अधूरेपन और अस्त-व्यस्तता के बीच से पूर्णता की तलाश ने मोहन राकेश को एक अलग व्यक्तित्व दिया। मोहन राकेश के अधूरेपन की अनुभूति हिंदी जगत् के लिए एक वरदान सिद्ध हुई। वे अनुभवों के दौर से न गुज़रे होते, तो 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों का राजहंस', 'आधे-अधूरे' जैसी महान् कृतियाँ हमारे सामने नहीं आतीं।***'

तत्पश्चात् 'नव द्वीप' नाट्यशाला ने 'आधे-अधूरे' नाटक के अंतिम भाग का मंचन किया।

श्री लेखराज सिंह पांडोही ने 'आधे-अधूरे' के शिक्षण पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने नाटक के शिक्षण में भाव, रस और अभिनय के महत्व का रेखांकन किया।

बी. ए. हिंदी की छात्रा सुश्री प्रियंका सुखलाल ने 'आधे-अधूरे' के अध्ययन पर अपने अनुभव व्यक्त करते हुए कहा कि 'इस नाटक में चित्रित समस्याओं के माध्यम से मेरे विचार, बोल एवं व्यवहार में परिवर्तन आया है। इस दृष्टि से मैं हिंदी छात्रों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करना चाहती हूँ कि वे हिंदी नाट्य साहित्य का लाभ उठाते हुए 'आधे-अधूरे' का अध्ययन अवश्य करें और अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ'

अंत में परिचर्चा-सत्र के दौरान उपस्थित श्रोताओं ने अपने विचार दिए। इस अवसर पर हिंदी शैक्षणिक एवं प्रचारक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों, हिंदी शिक्षकों व छात्रों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। धन्यवाद-ज्ञापन एवं मंच-संचालन, विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

ब्रिटेन में हिंदी के 27 वर्ष' विषय पर चर्चा

7 सितंबर, 2017 को हाउस ऑव लोड्स, लंदन में वातायन द्वारा 'ब्रिटेन में हिंदी के 27 वर्ष' विषय पर चर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी के प्रसारक एवं कवि डॉ. पद्मेश गुप्त के कविता-संग्रह 'प्रवासी-पुत्र' का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता लेखक एवं बी.बी.सी. वर्ल्ड सर्विस के प्रमुख श्री कैलाश बुधवार ने की, जिन्होंने ब्रिटेन में डॉ. पद्मेश का हिंदी के प्रति योगदान का उल्लेख किया। वातायन की संस्थापक और लेखिका, दिव्या माथुर ने कार्यक्रम का परिचय दिया। कृति यू.के. की संस्थापक तितिक्षा शाह ने डॉ. पद्मेश के निजी और व्यावसायिक-करियर में उनके व्यवहार पर बात की। वेल्स से कवि डॉ. निखिल कौशिक ने डॉ. पद्मेश के यू.के. में शुरुआती दिनों की यादें ताज़ा कीं, तो डॉ. के.के. श्रीवास्तव ने उनकी कविता पर बात की। वाणी प्रकाशन से श्री अरुण माहेश्वरी ने डॉ. पद्मेश की कविताओं को प्रगतिशील लेखन का प्रतीक बताया। विद्वान डॉ. दाउजी गुप्त ने उन विभिन्न तथ्यों का उल्लेख किया, जिनसे डॉ. पद्मेश प्रभावित हुए। वातायन के अध्यक्ष और निदेशक मीरा कौशिक ओबाई ने डॉ. पद्मेश का ब्रिटेन में हिंदी साहित्य के प्रति योगदान को व्यक्त किया। डॉ. पद्मेश ने ब्रिटेन में हिंदी आंदोलन के निर्माण, पुरवाई का प्रकाशन, ब्रिटेन, यूरोप और रूस में हिंदी छात्रों हेतु हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता, कवि-सम्मेलन आदि में अपनी भूमिका के बारे में बताया तथा कविता-पाठ किया। साथ-साथ उन्होंने ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों की साझेदारी में एक वार्षिक भारतीय साहित्य एवं सांस्कृतिक उत्सव की घोषणा की। कार्यक्रम में ब्रिटेन, यूरोप, भारत और अमेरिका से कई अतिथियों की उपस्थिति रही। धन्यवाद-ज्ञापन शिखा वार्ष्णेय ने किया।

साभार : वातायन

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 131वीं जयंती समारोह

3 अगस्त, 2017 को महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान सेवाग्राम के डॉ. सरोजिनी नायडू सभागार में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 131वीं जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने मैथिलीशरण गुप्त के कुछ उद्धरणों का उल्लेख करते हुए उनके हिंदी साहित्य व भारतीय समाज के जागरण में उनके अप्रतिम योगदान पर बात की। इस अवसर पर काव्य-सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी और गुजराती की वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती नंदिनी मेहता ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने गज़ल प्रस्तुत कर प्रकृति की अनुपम छटा का दर्शन करवाया तथा कबीर एवं गांधी जी की परंपरा की बात की। उद्बोधन-सत्र में श्री राम परिहार ने गुप्त जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला तथा 'गुप्त जी का सांस्कृतिक दृष्टिबोध' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में साहित्य की महती भूमिका रही व गुप्त द्वारा महाकाव्यों में सदा उपेक्षित रहीं स्त्री पात्रों के माध्यम से सांस्कृतिक जागरण को नई स्फूर्ति दी गई। इस अवसर पर मेडिसिन विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. पी.पी. गुप्त द्वारा रचित दो पुस्तकों का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। समारोह में कई गण्यमान्य अतिथियों सहित संस्थान के विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुपमा गुप्त ने किया तथा आभार-ज्ञापन श्री नरेंद्र दंढारे ने किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

लोकार्पण

दो साहित्यकारों के काव्य-संग्रहों का लोकार्पण

31 जुलाई, 2017 को जी. आई. ए. हाउस सभागार गुरुग्राम में 'शब्द शक्ति साहित्यिक संस्था' के तत्वावधान में कवयित्री श्रीमती ममता सिंह 'अमृत' के कविता-संग्रह 'दो घूंट वजूद' तथा अरुण माहेश्वरी के काव्य-संग्रह 'या हंसा चुर्ग-मेरी पसंदीदा शायरी' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक रहे तथा अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार शेरजंग गर्ग व डॉ. रघुनाथ ऐरी ने की। समारोह के मुख्य वक्ता हरियाणा साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. नंदलाल महत्ता 'वागीश' रहे। समारोह के दौरान श्री अशोक शर्मा 'अक्स', मुकेश शर्मा, कृष्णलता यादव, विनय विनम्र 'शुक्ल' एवं श्वेता भारती ने अपनी रचना-प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर हरियाणा कला परिषद् के अध्यक्ष अजय सिंहल, सुरुचि साहित्य परिवार के महासचिव, मदन साहनी, बाल साहित्यकार घमंडीलाल अग्रवाल, जी. आई. ए. के पूर्व अध्यक्ष तथा समाजसेवी जगन मंगला तथा पूर्व पार्षद सुभाष सिंगला उपस्थित थे। मंच-संचालन वरिष्ठ साहित्यकार श्री नरेंद्र गौड़ ने किया।

साभार : दैनिक ट्रिब्यून ऑनलाइन.कॉम

दो कविता-संग्रहों का लोकार्पण

13 अगस्त, 2017 को मायाराम सुरजन भवन के सभाकक्ष में मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की भोपाल इकाई के तत्वावधान में दो युवा कवियों के कविता-संग्रहों का लोकार्पण किया गया। साहित्यकार डॉ. दिनेश कुशवाह के मुख्य आतिथ्य व वरिष्ठ कवि श्री राजेंद्र नागदेव की अध्यक्षता में कवि सुधीर के कविता-संग्रह 'प्रजापति और अन्य कविताएँ' तथा कवि विपुल श्रीवास्तव के कविता-संग्रह 'आँसू हैं मुस्कान' का लोकार्पण संपन्न हुआ। श्री राजेंद्र नागदेव ने दोनों कवियों की रचनाओं की सराहना की। भोपाल इकाई के अध्यक्ष, श्री अभिषेक वर्मा ने कहा कि कविता विचारों के निचोड़ और शब्दों के आभूषणों से जन्म लेती है। कार्यक्रम में श्री रमाकांत श्रीवास्तव, पलाश सुरजन, राग तेलंग आदि अनेक साहित्यकार एवं गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। समारोह का संचालन कवि-अनुवादक श्री आनंदकृष्ण ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री अनंत बिल्लोरे ने किया।

साभार : रंग संस्कृति.कॉम

डॉ. अमित भारद्वाज के कविता-संग्रह 'प्रेम में डूबा लड़का' का विमोचन

11 अगस्त, 2017 को विधानसभा सचिवालय, झज्जर, हरियाणा में दिल्ली के उपमुख्य मंत्री के हाथों डॉ. अमित भारद्वाज के कविता-संग्रह 'प्रेम में डूबा लड़का' का विमोचन किया गया। विधानसभा अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मनीष सिसोदिया ने 'प्रेम में डूबा लड़का' पर बात करते हुए कहा कि जीवन की कविता किसी नियम को नहीं मानती और इस पुस्तक में गहन निरीक्षण के आधार पर लिखी गई कविताएँ हैं। श्री रामनिवास गोयल ने कहा कि आधुनिक युग में साहित्यिक विधा का सबसे अधिक प्रभाव काव्य-रचना का रहा। इस कविता-संग्रह में प्रेम तथा अन्य जीवन विषयों से संबंधित कविताएँ संकलित हैं। समारोह में कई विधायकों और कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

साभार : वूमेनफ़र्स्टडॉटइन

डॉ. जे.के.वी. राव के कविता-संग्रह 'कविता वितान' का लोकार्पण

18 जुलाई, 2017 को पोट्टिश्रीरामुलु तेलुगू विश्वविद्यालय सभागार में साहित्य सेवा समिति, हैदराबाद के तत्वावधान में डॉ. जे.के.वी. राव के अनूदित कविता-संग्रह 'कविता वितान' का लोकार्पण डॉ. एन. गोपी के हाथों संपन्न हुआ। केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. सर्राजू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर सभी उपस्थित अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के दौरान तेलुगू कवि सुदामा तथा कवयित्री मर्सी मार्ग्रेट एवं मं. हैमावती को सम्मानित किया गया। डॉ. जे. किष्टाबाबू ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : इ-पेपर. स्वतंत्रवार्ता.कॉम

कवयित्री रेखा राजवंशी के गज़ल-संग्रह 'मुट्ठी भर चांदनी' का लोकार्पण

23 जुलाई, 2017 को सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में कवयित्री रेखा राजवंशी के गज़ल-संग्रह 'मुट्ठी भर चांदनी' का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सिडनी में भारत के कौंसिल जनरल श्री बनलालवावना और स्ट्रैथफ़ील्ड की एम.पी. सुश्री जोडी मकाय के हाथों पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। श्री बनलालवावना ने हिंदी के प्रति कवियित्री के समर्पण की प्रशंसा की और एक प्रवासी के अनुभवों से जुड़ी उनकी कविताओं की सराहना की। साथ-साथ कई संस्थाओं के अध्यक्ष श्री देव पासी, माला मेहता, डॉ. यादु सिंह और आशीष घोलकर ने कवयित्री की रचना पर अपने विचार व्यक्य किए। इस अवसर पर कई गायक-गायिकाओं ने गज़ल गायन किया। समारोह का संचालन प्रसिद्ध शायर और कवि श्री अब्बास रज़ा अल्वी ने किया।

साभार : हिंदी वेब दुनिया.कॉम

कवि श्री चन्द्रकान्त देवताले की दो पुस्तकों 'सुकरात का घाव' और 'भूखण्ड तप रहा है' का लोकार्पण

6 जुलाई, 2017 को हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली में अनुप्रिया वॉयलन अकादमी द्वारा साहित्य कला परिषद् एवं कला संस्कृति और भाषा विभाग, दिल्ली सरकार के सहयोग से 'संगीत शब्दों से परे' कार्यक्रम के दौरान कवि श्री चन्द्रकान्त देवताले की दो पुस्तकों 'सुकरात का घाव' और 'भूखण्ड तप रहा है' का लोकार्पण किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उपमुख्य मंत्री माननीय श्री मनीष सिसोदिया तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में कवि तथा संस्कृति एवं कला संरक्षक श्री राजदूत अमरेन्द्र खतुआ उपस्थित रहे। समारोह के दौरान श्री चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं का वाद्य यन्त्रों पर गायन किया गया।

साभार : वाणी प्रकाशन ब्लॉग.ब्लॉगस्पॉट.इन

मुंशी प्रेमचंद संगोष्ठी के अवसर पर 'हिंदुत्व की छाया में इण्डोनेशिया' पुस्तक का लोकार्पण

31 जुलाई, 2017 को गांधी शांति प्रतिष्ठान केंद्र, जोधपुर में अंतर प्रांतीय कुमार साहित्य परिषद् द्वारा मुंशी प्रेमचंद संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. मोहनलाल गुप्त की पुस्तक 'हिंदुत्व की छाया में इण्डोनेशिया' का लोकार्पण राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर 'तत्पुरुष' तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री विपिनचंद्र शर्मा के हाथों संपन्न हुआ। डॉ. इन्दुशेखर 'तत्पुरुष' तथा भारतीय साहित्य परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री विपिन चंद्र शर्मा ने पुस्तक की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय, डॉ. सत्यनारायण, डॉ. कैलाश कौशल, डॉ. पद्मजा शर्मा, डॉ. सावित्री डागा, चांद कौर जोशी, डॉ. भावेन्द्र शरद जैन, डॉ. छोटा राम, दीप्ति कुलश्रेष्ठ, सुषमा चौहान, डॉ. सरोज कौशल, डॉ. कुक्कू शर्मा, डॉ. संध्या शुक्ल, डॉ. रमाकांत शर्मा, डॉ. शैलेन्द्र आचार्य, डॉ. संजय श्रीवास्तव तथा डॉ. आकाश मिड्ढा सहित अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

साभार : प्रभा साक्षी.कॉम

नोएडा

16 सितंबर, 2017 को नोएडा स्टेडियम में 'नई पहल' द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में साहित्यकार श्री शैलेंद्र कुमार भाटिया के कविता-संग्रह 'सफ़ेद कागज़' एवं बेल्जियम के प्रवासी साहित्यकार श्री कपिल कुमार के गज़ल-संग्रह 'सुनहरे अश्क' का लोकार्पण एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि युवा विधायक श्री पकंज सिंह रहे, जिन्होंने 'नई पहल' को बधाई देते हुए उसकी सक्रिय सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहल को साहित्यिक स्तर पर विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने के प्रयास की सराहना की। इस अवसर पर कई कवियों द्वारा काव्य-पाठ किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन हास्य कवि श्री विनोद पाण्डेय ने किया।

साभार: श्री विनोद पाण्डेय का फ़ेसबुक पृष्ठ

पुस्तक-लोकार्पण, काव्य-गोष्ठी एवं सम्मान-समारोह

18 अगस्त, 2017 को गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में नवजागरण प्रकाशन दिल्ली द्वारा पुस्तक-लोकार्पण, कवि-सम्मेलन एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जौहर सफ़ियाबादी ने की तथा डॉ. रमा शंकर श्रीवास्तव, डॉ. अशोक लव, डॉ. कमलजीत सिंह जीनत तथा वरिष्ठ आई.ए.एस अधिकारी राजकुमार सचान होरी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर केशव मोहन पाण्डेय द्वारा संपादित कृति 'पंच पल्लव' तथा श्रीमती मधु त्यागी द्वारा एकल काव्य-संग्रह 'आह्वान' का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसमें मिलन सिंह मधुर, असलम जावेद, तरुणा पुंडीर, सुजीत कुमार सौरभ, जलज कुमार मिश्र, पूजा कौशिक तथा सोनू पाण्डेय सहित दर्जनों कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। केशव मोहन पाण्डेय, डॉ. मनोज तिवारी, मधु त्यागी, शालिनी शर्मा और मुकेश यादव को 'पंच पल्लव सम्मान' से तथा वरिष्ठ लेखक, कवि एवं पत्रकार लालबिहारी लाल को 'साहित्य सर्जक सम्मान' से सम्मानित किया गया। विजय प्रकाश भारद्वाज ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा अंत में समाजसेवी एवं लेखक दीनबंधु तिवारी ने आगन्तुकों को हार्दिक बधाई दी।

साभार : लाल बिहारीलाल.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

'समकालीन सरोकार और साहित्य' का लोकार्पण

20 अगस्त, 2017 को नामपल्ली स्थित हिंदी प्रचार सभाकक्ष, हैदराबाद में कादंबिनी क्लब के तत्वावधान में डॉ. ऋषभदेव शर्मा और डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा द्वारा संपादित *'समकालीन सरोकार और साहित्य'* नामक आलोचना पुस्तक का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. गोपाल शर्मा ने की। लोकार्पण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. एम. वेंकटेश्वर के हाथों संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण प्रणव ने किया।

साभार : डॉ. ऋषभदेव शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्री भोलानाथ मधुकर की पुस्तक 'आलोक पुंज अंबेडकर' का लोकार्पण

20 अगस्त, 2017 को सटे गौसपुर स्थित होटल सिद्धि विनायक के परिसर, समस्तीपुर में अखिल भारतीय बाम सेफ एवं राष्ट्रीय मूल निवासी संघ के संयुक्त सम्मेलन में साहित्यकार श्री भोलानाथ मधुकर की पुस्तक *'आलोक पुंज अंबेडकर'* का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता बाम सेफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री जयप्रकाश पासवान ने की। लोकार्पण पूर्व अपर ज़िला जज श्री नगेंद्र नाथ एवं श्री जयप्रकाश पासवान के हाथों संपन्न हुआ। इस अवसर पर वक्ताओं ने भारतीय संविधान के निर्माता भीम राव अंबेडकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए, उन्हें समरस समाज का स्वप्नद्रष्टा एवं स्वतंत्र भारत का निर्माता बताया। समारोह में शिक्षक श्री हरिश्चंद्र पासवान, श्री इंतेसार अहमद, श्री सुनील कुमार साह, श्री राजन कुमार आदि उपस्थित थे।

साभार : लाइव समस्तीपुर

श्री हरीश लखेड़ा की पुस्तक 'उत्तराखण्ड आन्दोलन-स्मृतियों का हिमालय' का लोकार्पण

11 अगस्त, 2017 को उत्तराखंड सदन, नई दिल्ली में मुख्य मंत्री माननीय त्रिवेद सिंह रावत ने वरिष्ठ पत्रकार हरीश लखेड़ा की पुस्तक *'उत्तराखंड आन्दोलन-स्मृतियों का हिमालय'* का विमोचन किया। मुख्य मंत्री रावत ने कहा कि 'उत्तराखण्ड आन्दोलन-स्मृतियों का हिमालय' उत्तराखंड की भावी पीढ़ी के लिए ऐतिहासिक संदर्भ के रूप में महत्वपूर्ण साबित होगी। इस अवसर पर आन्दोलनकारी प्रताप शाही, हरिपाल रावत, जगदीश ममगाई, धीरेंद्र प्रताप, देवसिंह रावत, पीसी नैनवाल, वरिष्ठ पत्रकार उमाकांत लखेड़ा, व्योमेश जुगरान, पीएल उनियाल, रोशन, विद्याशंकर तिवारी, सुनील नेगी, चारु तिवारी, देवसिंह रावत आदि कई पत्रकार भी उपस्थित थे।

साभार : हिमालयी लोग.कॉम

श्री नरेश मलिक के काव्य-संग्रह 'तुझको आगे बढ़ना होगा' का लोकार्पण

16 जुलाई, 2017 को दी. ग्रैंड बैंक्वेट हॉल के सभागार, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में प्रसिद्ध कवि एवं लेखक श्री नरेश मलिक के काव्य-संग्रह *'तुझको आगे बढ़ना होगा'* का लोकार्पण साहित्यकार पंडित सुरेश नीरव, कवयित्री सरोजनी प्रीतम, डॉ. कीर्ति काल्दे, शायर आदिल रशीद, मिसज़ वर्ल्ड माया सिंह, प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक पंकज जैसवानी, कांग्रेस जनरल सेक्रेटरी अनिरुद्ध लाल, नेता एवं पूर्व निगम प्रत्याशी गगनदीप साहनी जैसे गण्यमान्य अतिथियों के हाथों संपन्न हुआ। साथ-साथ सभी अतिथियों को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों हेतु गौरव सम्मान 2017 से विभूषित किया गया। उन्होंने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर काव्य-संध्या एवं ग़ज़ल-संध्या का भी आयोजन हुआ, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए कवि और कवयित्रियों ने काव्य-पाठ किया। समारोह का संचालन कवयित्री सुशीला शिवराण ने किया।

साभार : द्रू मीडिया न्यूज़.कॉम

श्री राकेश तिवारी की पुस्तक 'फसक' का लोकार्पण

21 जुलाई, 2017 को साहित्य अकादमी के सभागार, नई दिल्ली में वरिष्ठ पत्रकार एवं कथाकार श्री राकेश तिवारी की पुस्तक *'फसक'* का लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध आलोचक एवं गद्यकार डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने किया तथा पत्रकारिता और साहित्य विषय पर वक्तव्य दिया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हिंदी की विभागाध्यक्ष प्रो. हेमलता महिश्वर रहीं तथा डॉ. संजीव कुमार, डॉ. वैभव सिंह तथा डॉ. प्रेम तिवारी अन्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने *'फसक'* पुस्तक पर चर्चा की। धन्यवाद-ज्ञापन श्री अरुण माहेश्वरी ने किया।

साभार : नवोदय टाइम्स.इन

श्री राम किशोर उपाध्याय के कविता-संग्रह 'दीवार में आले' का लोकार्पण

23 जुलाई, 2017 को गाज़ियाबाद के हिंदी भवन में साहित्यकार श्री राम किशोर उपाध्याय के कविता-संग्रह *'दीवार में आले'* का लोकार्पण संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य अतिथि सुभाष राय ने की। समारोह में डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने श्री राम किशोर उपाध्याय और उनकी 52 कविताओं की विभिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डाला। साथ-साथ प्रमिला तथा डॉ. पुष्पा जोशी ने अपने-अपने आलेख पढ़े। इस अवसर पर युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच की ओर से डॉ. हरिसुमन बिष्ट को उनके उपन्यास *'आछरी माछरी'* के लिए 'प्रेमचंद श्रेष्ठ कथाकार सम्मान' तथा कवि एवं पत्रकार श्री संजय कुमार गिरि को साहित्य व पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु 'द्रू मीडिया साहित्यिक सम्मान 2017' से सम्मानित किया तथा डॉ. देवनारायण शर्मा व कई प्रमुख साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया।

साभार : हमारा गाज़ियाबाद.कॉम

श्री सुधाकर पाठक के कविता-संग्रह 'ज़िंदगी यूँ ही' के पंजाबी संस्करण का लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह

2 सितंबर, 2017 को पंजाबी भवन, नई दिल्ली में हिंदुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा प्रकाशित तथा श्री दिलबाग सिंह द्वारा अनूदित श्री सुधाकर पाठक के कविता-संग्रह 'ज़िंदगी यूँ ही' के पंजाबी संस्करण के लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव तथा विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कवयित्री डॉ. सीता सागर के रूप में उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने की। उन्होंने वैश्विक परिवेश में हिंदी के महत्व को रेखांकित किया तथा हिंदी की बढ़ती प्रगति को लेकर लोगों को आश्वस्त किया। श्री राहुल देव ने कहा कि हिंदी पाठक को 'मैं' से दूर रहकर सही मायनों में जागरूक बनना चाहिए तथा डॉ. सीता सागर ने पहले स्थान पर राष्ट्रभाषा को रखने की मांग की। अकादमी के अध्यक्ष श्री पाठक ने हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के उद्देश्यों और कार्यविस्तार के बारे में बताया। इस अवसर पर अरविंद शुक्ल (टी.वी. टूडे समूह), आशीष चौबे (इंडिया वाच), देवेश वशिष्ठ 'खबरी' (न्यूज़ 24), उदय कुमार सिंह (अहसाह टी.वी.), नवीन शिशोदिया (इंडिया वाइस), अमित कुमार सिंह, (न्यूज़ 18 इंडिया) तथा हर्षित मिश्र (टोटल टी.वी.) जैसे युवा टी.वी. पत्रकारों को सम्मानित किया गया। समारोह में विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के अध्यक्ष डॉ. आशीष कंधवे और हिंदी सेवी श्री राकेश पांडेय तथा कवि आशुतोष द्विवेदी सहित कई लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार श्री बृजेश द्विवेदी तथा डॉ. बीना राघव ने किया।

श्री सुधाकर पाठक की रिपोर्ट

श्री विद्याप्रकाश कुरील की दो पुस्तकों का लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह

29 जुलाई, 2017 को अग्रवाल सभा भवन, फ़र्रुखाबाद में श्री विद्याप्रकाश कुरील की दो पुस्तकें *'दलित रत्न नत्थूलाल'* एवं *'जेल डायरी'* का लोकार्पण एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें लोकार्पणकर्ता पूर्व राज्यपाल डॉ. श्री माताप्रसाद को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री विद्याप्रकाश कुरील ने अपने पिता और डॉ. श्री माताप्रसाद की परस्पर नज़दीकियों को याद करते हुए कहा कि उनकी इन कृतियों के द्वारा आज के युवाओं को प्रेरणा मिलेगी। समारोह में कई गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : मॉडर्न न्यूज़ इंडिया.कॉम

श्रीमती अंजू मोटवानी के कविता-संग्रह 'दूर कहीं' तथा गज़ल की सीडी 'निगाहों ही निगाहों में' का विमोचन

9 अगस्त, 2017 को बैंक नोट प्रेस के चामुण्डी सभागृह, देवास में श्रीमती अंजू मोटवानी के कविता-संग्रह *'दूर कहीं'* तथा गज़ल की सीडी *'निगाहों ही निगाहों में'* का विमोचन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि बैंक नोट प्रेस के महाप्रबंधक एम. सी. बैलप्पा ने सर्जना की रचनात्मकता की सराहना करते हुए लेखिका को बधाई दी। विशेष अतिथि श्री सुरेंद्र यादवेंद्र, श्री ओम वर्मा तथा अध्यक्षता कर रहे वयोवृद्ध कवि मदनमोहन व्यास ने संग्रह पर बात की। विमोचन प्रसंग वरिष्ठ कवि श्री प्रेमचंद शुक्ल ने दिया। कथाकार श्री मनीष वैद्य ने कहा कि साहित्य, संगीत, चित्रकला और संस्कृति का देवास में बड़ा नाम रहा है तथा उसी के अनुरूप अब भी युवा रचनाकार अच्छा काम कर रहे हैं। इस अवसर पर श्रीमती अंजू मोटवानी ने कविता-पाठ किया। श्री टेकनमल मोटवानी, देवराज फेरनानी, मुश्ताक शाह तथा नरेशचंद्र जोशी, सुश्री रेखा वर्मा, श्रीमती पूर्णिमा बैलप्पा, देवीलाल पाटीदार, सन्नी पिलानी, आकांक्षा पिलानी आदि कार्यक्रम में उपस्थित थे। समारोह का संचालन श्री मनीष वैद्य ने किया।

साभार : न्यूज़ नवसंवाद.कॉम

साहित्यिक अनुष्ठान एवं पुस्तक-लोकार्पण

12 जुलाई, 2017 को रोटरी दिल्ली अप्टाउन क्लब में 'तीन पीढ़ी : तीन साहित्यकार' विषयक साहित्यिक अनुष्ठान तथा श्री बनारसीदास बजाज के कविता-संकलन 'अतीत राग', डॉ. हरीश नवल की पुस्तक 'नव साहित्य की भूमिका' और श्री हर्षवर्धन आर्य के कविता-संकलन 'सपनों में चिड़िया' का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध कवि श्री बालस्वरूप राही मुख्य अतिथि के रूप में तथा आलोचक डॉ. कमल किशोर गोयनका अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। समारोह के दौरान एसोसिएट प्रो. डॉ. हरिंदर कुमार ने तीनों साहित्यकारों और उनकी उत्कृष्ट कृतियों की समीक्षा प्रस्तुत की। तीनों लेखकों ने अपनी-अपनी रचनाएँ पढ़ीं। कार्यक्रम में कई प्रसिद्ध साहित्यकारों की उपस्थिति रही, जिनमें पुष्पा राही, स्नेह सुधा नवल, रवि शर्मा 'मधुप', सुधा शर्मा, प्रेम बिहारी मिश्र, अनिल मीत, विवेक गौतम, प्रेम भारद्वाज ज्ञानभिक्षु, मनोज अबोध, आशीष कंधवे, ओम सपरा, नीलांजल बैनर्जी, कुसुम शर्मा, स्नेह त्यागी, कमलेश पांडेय और सुरम्या शर्मा शामिल थे। डॉ. हरीश नवल ने संचालन किया तथा श्री विजय सर्राफ़ ने आभार प्रकट किया।

डॉ. हरीश नवल का फ़ेसबुक पृष्ठ

सम्मान

महात्मा गांधी संस्थान आप्रवासी हिंदी साहित्य सृजन सम्मान

23 अगस्त, 2017 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सुब्रमण्यम् भारती सभागार, मोका में आप्रवासी हिंदी साहित्य सृजन सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि मॉरीशस राष्ट्रीय भवन की स्पीकर माननीया श्रीमती सांति बाई हनुमानजी, जी.सी.एस.के. रहीं। इस अवसर पर संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकान्ति गयान, जी.ओ.एस.के., संस्थान की निदेशिका, डॉ. विद्योत्मा कुंजल, संस्थान के परिषद् के अध्यक्ष, श्री जयनारायण मीतू व अन्य गण्यमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

यह पुरस्कार हर दो वर्ष में प्रवासी हिंदी साहित्यकार को हिंदी में उत्कृष्ट सृजनात्मक कर्म एवं भाषा के उत्थान के लिए दिया जाता है। इस वर्ष यह पुरस्कार पीटर्सबर्ग में रहनेवाले व्यवसाय से मेकैनिकल इंजीनियर श्री अनुराग शर्मा को उनके कहानी-संग्रह 'अनुरागी मन' हेतु दिया गया। आई.टी. सेक्टर से जुड़े श्री अनुराग शर्मा साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य-सृजन की रुचि रखते हैं। वे कई पुस्तकों के लेखक हैं और विविध राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित भी हो चुके हैं।

इस अवसर पर माननीया श्रीमती सांति बाई हनुमानजी ने श्री अनुराग शर्मा को बधाई देते हुए कहा कि इस समारोह का लक्ष्य यह है कि भारतीय प्रवासी देशों में हिंदी में रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित किया जाए ताकि अधिक से अधिक लेखक प्रेरित हों। उन्होंने कहा ***''प्रचार द्वारा भारत की वर्तमान सांस्कृतिक विरासत को दुनिया भर में 170 से अधिक देशों में पहुँचाने का प्रयास अद्वितीय है, जो प्रभावों की बहुलता को समाविष्ट करते हुए वैश्विक भारतीय सांस्कृतिक विरासत को शामिल करने के लिए एक साथ मिश्रित करता है।''*** साथ-साथ उन्होंने विविधता में एकता पर बल देते हुए उस अदृश्य धागे की ओर संकेत किया, जिसने पीढ़ी दर पीढ़ी, महासागरों तथा विदेशी भूमि को भारत तथा उसके प्रवासी देशों को एक अटूट बंधन में बाँधे रखा।

श्रीमती सूर्यकान्ति गयान ने स्वागत-भाषण देते हुए कहा कि ***''कला एवं संस्कृति मंत्रालय कई दशकों से मॉरीशस में पढ़ाए जा रहे सभी भाषाओं में नाटक में प्रतियोगिताओं का आयोजन करता आ रहा है, जिनमें युवा भाग लेते हैं। हमें इन नाटकों का संपादन करना चाहिए तथा रचनात्मक प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहिए ताकि आवश्यक परिपक्वता और बारीकियों का निर्माण हो सके।''***

डॉ. नूतन पाण्डेय ने श्री अनुराग शर्मा तथा उनकी पुस्तक 'अनुरागी मन' का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि यह पुरस्कार भारत से बाहर बस रहे उन सभी भारतवासियों के लिए हैं, जिन्होंने भारत को किसी न किसी रूप में अपने भीतर सहेजकर रखा; चाहे वह साहित्य-सृजन के माध्यम से हो या भाषा संस्कृति के संरक्षण द्वारा हो।

श्री अनुराग शर्मा ने संस्थान को धन्यवाद देते हुए कहा कि अभिव्यक्ति ही साहित्य का मूल केंद्र है। बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो कही नहीं जा सकतीं। एक संवेदनशील साहित्यकार की यही चिंता रहती है कि वह पंक्तियों के बीच भाव प्रकट करे, जो एक मुश्किल काम है। उन्होंने अपनी रचना के माध्यम से भाव के प्रकटीकरण पर विशेष ध्यान दिया।

इस अवसर पर डॉ. नूतन पाण्डेय, विश्व हिंदी सचिवलाय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् चेयर के डॉ. उमेश कुमार सिंह को निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान वोकल हिंदुस्तानी संगीत के व्याख्याता श्री एस.एस. मंगू द्वारा श्री अभिमन्यु अनत कृत 'वह अनजान आप्रवासी पर आधारित 'हमारे पूर्वजों की अनकहि दास्तां गीत की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राजरानी गोबिन ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान-समारोह

5 अगस्त, 2017 को कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन द्वारा फापसी सभागृह, हैदराबाद में गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें वरिष्ठ तेलुगू-भाषी हिंदी साहित्यकारों एवं हिंदी पत्रकारों को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. शुभदा वांजपे ने की। इस अवसर पर कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान को सराहा व संस्था का परिचय दिया।

आंध्र प्रदेश के हिंदी साहित्यकारों के सम्मान में घोषित वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. टी. मोहनसिंह को उनके साहित्यिक योगदान के लिए 'भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान 2017, विशाखापट्नम की श्रीमती पारनन्दि निर्मला को लेखक श्री आदिनारायण की तेलुगू पुस्तक 'जिप्सी की हिंदी में अनुसृजन तथा उसके द्वारा हिंदी व तेलुगू साहित्य के प्रति किए गए समग्र योगदान के लिए 'गीतादेवी गोइन्का हिंदी-तेलुगू अनुवाद पुरस्कार 2017 तथा आंध्र प्रदेश के हिंदी पत्रकारिता जगत् के वरिष्ठ पत्रकारों के सम्मानार्थ घोषित हैदराबाद से प्रकाशित प्रमुख हिंदी दैनिक 'हिंदी मिलाप की पत्रकार श्रीमती कुमुद जैन को 'श्री मुनींद्र पत्रकारिता सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रादेशिक पुरस्कार समिति के सदस्य डॉ. राधेश्याम शुक्ल, श्री रवि श्रीवास्तव, श्री वेणुगोपाल भट्टड़, डॉ. एम. रंगय्या, अहिल्या मिश्र, अनीता श्रीवास्तव एवं सहन्यासी श्रीमती ललिता गोइन्का सहित हैदराबाद के अनेक गण्यमान्य साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। समारोह का संचालन श्रीमती मीना ने किया तथा श्री ओमप्रकाश गोइन्का ने आभार व्यक्त किया।

साभार : कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन

जोधपुर में 20 रचनाकारों का सम्मान

जुलाई 2017 को जोधपुर में मंज़िल ग्रुप साहित्यिक मंच, दिल्ली द्वारा 20 रचनाकारों को देश भर में उनकी रचनाओं के पाठ के दौरान श्रेष्ठता के आधार पर सम्मानित किया गया। इसके अंतर्गत डाक निदेशक एवं साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार यादव को 'रचना स्वर्ण प्रतिभा सम्मान, सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री मुरलीधर वैष्णव को 'रचना रजत प्रतिभा सम्मान, ब्लॉगर श्रीमती आकांक्षा यादव को 'रचना प्रतिभा सम्मान तथा डॉ. रमाकांत शर्मा, मदन मोहन परिहार, हबीब कैफ़ी, हरिप्रकाश राठी, डॉ. पद्मजा शर्मा, डॉ. ज़ेबा रशीद, पुष्पलता कश्यप, बसंत कुमार, भानु मित्र, अनिल अनवर, अक्षय गोजा, अर्जुन देव चारण, मनशाह नायक, दिनेश सिंदल और शुशीद खैराडी को 'शतकवीर सम्मान से अलंकृत किया गया। ये सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वरिष्ठ कवि-कथाकार श्री रविदत्त मेहता, वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरिदास व्यास और मंज़िल ग्रुप साहित्यिक मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुधीर सिंह सुधाकर के हाथों प्रदान किए गए।

श्री कृष्ण कुमार यादव की रिपोर्ट

साहित्यकार डॉ. सुनील कुमार परीट को सम्मान

20 अगस्त, 2017 को दिल्ली की मंज़िल ग्रुप साहित्यिक मंच का कर्नाटक के बेंगलुरु में बनशंकरी में रचना-पाठ एवं सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती बी.एस. शांताबाई, मुख्य अतिथि डॉ. मोहनचंद्र जोशी, संस्था के राष्ट्रीय संयोजक श्री सुधीर सिंह 'सुधाकर, बेंगलूरु संयोजिका श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव और समाज-सेवक श्री मदन बलदोता के कर-कमलों द्वारा डॉ. सुनील कुमार परीट को 'शतकवीर सम्मान, 'रचना प्रतिभा सम्मान तथा 'रचना रजत प्रतिभा सम्मान प्रदान किया गया। संस्था ने उनको दक्षिण भारत के प्रभारी के रूप में नियुक्त किया है। डॉ. सुनील कुमार परीट अहिंदी प्रदेश कर्नाटक के कन्नड-भाषी होते हुए भी हिंदी साहित्यकार हैं।

डॉ. सुनील कुमार परीट की रिपोर्ट

साहित्यकार प्रो. ऋषभदेव शर्मा को अंतरराष्ट्रीय हिंदी मित्र सम्मान

28-29 सितंबर, 2017 को विले पार्ले स्थित साठ्ये महाविद्यालय, मुंबई में आयोजित 'रामकथा और आदिवासी साहित्य विषयक द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा, मॉस्को एवं साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्थान, मुंबई की ओर से साहित्यकार प्रो. ऋषभदेव शर्मा को 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी मित्र सम्मान' से अलंकृत किया गया। यह सम्मान उन्हें उनकी हिंदी भाषा से संबंधित शैक्षिक, साहित्यिक और सामाजिक कार्यों हेतु प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता साठ्ये कॉलिज की प्राचार्य डॉ. कविता रेगे ने की। इस अवसर पर निदेशक डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह, डॉ. दिलीप सिंह, महात्मा गांधी संस्थान की निदेशक डॉ. विद्योत्मा कुंजल, हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के प्रधान डॉ. यंतुदेव बुधु, श्रीलंका की हिंदी लेखिका डॉ. वजीरा गुणसेना, अभिनेत्री पुष्पा वर्मा, हिंदी संगम फ़ाउंडेशन, अमेरिका के निदेशक डॉ. अशोक ओझा, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, आदि देश-विदेश के अनेक हिंदी सेवी एवं साहित्यकार उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिल सिंह ने किया।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

श्रद्धांजलि

डॉ. मधु धवन

26 जून, 2017 को वरिष्ठ साहित्यकार तथा शिक्षाविद् डॉ. मधु धवन का 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 22 फ़रवरी, 1952 को हुआ था। आपने 1990 में अन्नमलै विश्वविद्यालय से डिप्लोमा इन प्रोड्यूसर, 1984 में बंगलौर विश्वविद्यालय से पी.एच.डी और 1977 में पी.जी. डिग्री तथा एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। आपने दक्षिण भारत में हिंदी पाठ्यक्रम निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया और अनेक पत्रिकाओं द्वारा हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया। तमिलनाडु के स्कूल व कॉलिजों में कैरियर ऑरीएन्टड पाठ्यक्रम बनाया। नाटकों के माध्यम से आपने दक्षिण भारत में बोलचाल की हिंदी को बढ़ावा दिया। आपने तमिलनाडु हिंदी साहित्य अकादमी तथा तमिलनाडु मल्टी लिंग्वल विमेन राइटर्स एसोसिएशन की स्थापना की। आप *'मेरी रक्षा'* समाचार-पत्र तथा त्रैमासिक *'तमिलनाडु साहित्य बुलेटिन'* की संपादक रहीं। आप स्टेला मैरिस कॉलिज में हिंदी विभागाध्यक्षा रहीं। इसके साथ-साथ दक्षिण भारत में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की समस्याओं के निवारणार्थ स्कूल शिक्षकों के लिए लगभग 200 कार्यशालाएँ चलाती थीं। आपको 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान भारत सरकार द्वारा 'विश्व हिंदी सम्मान 2015' से सम्मानित किया गया। आपको 2013 में जबलपुर में 'कादंबरी पुरस्कार', 2012 में साहित्य अकादमी भोपाल द्वारा 'मुक्ति बोध', 2003 में वाराणसी में 'महादेवी वर्मा आवर्ड' तथा इलाहाबाद में 'रत्न', *'इंटरनेट का माऊस'* कहानी-संग्रह के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय सम्मान', 2008 में तीसरे हिंदी भाषा कुंभ में 'अति विशिष्ट साहित्य सेवी सम्मान', 2002 में साहित्यानुशीलन समिति द्वारा हिंदी के क्षेत्र में साहित्यिक योगदान हेतु सम्मान, 2001 में अखिल भारतीय मानवाधिकार संगठन, एम.पी द्वारा समाज के प्रति योगदान के लिए सम्मान, 2001 में 'चिंतामणि सम्मान', 2001 में 'भारतीय आवर्ड', 2000 में दिल्ली के मिलेनियम विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मान, बिहार के विक्रमशिला विश्वविद्यालय द्वारा 'विद्यासागर' सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।

1994 में 'हुतात्मा', 1999 में 'भारत ललत', 1999 में 'कार्गिल की लल्कार', 2003 में 'अमृतमए', 2004 में 'धर पर खिला दिव्य फूल' जैसे महाकाव्य, 'स्वर्णिम भारत', 'तुम बिन बदल गए' जैसे कविता-संग्रह, 2014 में 'आज की पुकार', 1999 में 'भारत कहाँ जा रहा है', 1997 में 'त्रास' और 'भगत सिंह', 1993 में 'भूल', 1992 में 'मैंने खूब चाहा' जैसे नाटक, 'बाल किशोर एकांकी', 2004 में 'साइबर माँ', 'मैं सृष्टि की आत्मा हूँ', 'प्यार भरा पंछी-कल्की', 2002 में 'शिखरों से ऊँचा', 2000 में 'शक्ति पुंज' और 'महा सागर के शंख', 1999 में 'तूफ़ानी झंझा का दिया', 'आकांक्षा', 'करवट लेता वक्त' और 'जुर्माना', 1997 में प्यार भरे दादाजी', 2002 में 'उस मोड़ पर' जैसे उपन्यास, 'झरते अश्रु', 'अमृत बूंदें' तथा 'खौफ़' जैसी लघुकथाएँ तथा 'पत्रकारिता एक परिचय' आदि आपकी प्रमुख कृतियों में शामिल हैं।

साभार : न्यूज़ अप ऑनलाइन.इन व मधु धवन.कॉम

श्री चन्द्रकान्त देवताले

14 अगस्त, 2017 को प्रसिद्ध कवि श्री चन्द्रकान्त देवताले का 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 7 नवंबर, 1936 को मध्य प्रदेश के बैतूल ज़िले के जौल खेड़ा में हुआ था। आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा इंदौर से शुरू की। आपने हिंदी में एम.ए. करने के पश्चात् सागर यूनिवर्सिटी से मुक्तिबोध पर पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की। आपने इंदौर में एक कॉलिज में शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा सेवानिवृत्त होकर स्वतंत्र लेखन से जुड़ गए। देवताले साठोत्तरी हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। आपको 2011 में 'कविता समय सम्मान', 2003 में 'भवभूति अलंकरण', 2002 में 'पहल सम्मान', 1986 में 'मध्य प्रदेश शासन शिखर सम्मान', 'माखनलाल चतुर्वेदी कविता पुरस्कार', 'सृजन भारती सम्मान', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' और 'साहित्य अकादमी सम्मान' प्राप्त हुए। आपकी प्रमुख कृतियों में 'रोशनी के मैदान के उस तरफ़', 'पत्थर फेंक रहा हूँ', 'हड्डियों में छिपे ज्वार', 'दीवारों पर खून से', 'लकड़बग्घा हँस रहा है', 'हर चीज़ आग में बताई गई थी', 'भूखंड तप रहा है', 'सुकरात का घाव', 'पत्थर की बैंच', 'इतनी पत्थर रोशनी', 'उसके सपने', 'बदला बेहद महंगा सौदा' आदि शामिल हैं। आपने 'मुक्तिबोध : कविता और जीवन विवेक' जैसी आलोचना, 'पिसाटी का बुर्ज' का मराठी से हिंदी अनुवाद तथा संत तुकाराम की रचनाओं का अनुवाद, 'दूसरे-दूसरे आकाश' तथा 'डबरे पर सूरज का बिम्ब' का संपादन भी किया। भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक लीलाधर मंडलोई, विष्णु खरे, विष्णु नागर, मंगलेश डबराल, कवि कुमार अंबुज, कवि बहादुर पटेल, कवि निरंजन श्रोत्रिय समेत कई लेखकों ने श्री चन्द्रकान्त देवताले के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया।

साभार : हिंदी न्यूज़ 18 डॉट कॉम तथा पत्रिका.कॉम

कवि श्री गुलाब खंडेलवाल

2 जुलाई, 2017 को कवि श्री गुलाब खंडेलवाल का 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 21 फ़रवरी, 1924 को नवलगढ़ ज़िला झुझनू, राजस्थान में हुआ था। आपने 1943 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। आप पिछले 14-15 वर्षों से अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति रहे हैं। 2007 में प. मालवीय द्वारा स्थापित सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था भारती परिषद्, प्रयाग के भी अध्यक्ष चुने गए। अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति की ओर से अमेरिका में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका *'विश्वा'* के संपादक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। आपके साहित्य के विविध अंगों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में कई छात्रों द्वारा शोध भी किए गए हैं। आपकी 6 पुस्तकें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा और एक पुस्तक बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। प्रबंध काव्य 'अहल्या' के लिए हनुमान मंदिर ट्रस्ट, कलकत्ता द्वारा आपको 1985 में पुरस्कृत किया गया। दिसंबर 1986 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका द्वारा राजधानी वाशिंग्टन में विशिष्ट कवि के रूप में आपको सम्मानित किया गया। 26 जनवरी, 2006 को अमेरिका की राजधानी वाशिंग्टन डी. सी. में अमेरिका और भारत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह में मेरीलैंड के गवर्नर द्वारा आपको कवि-सम्राट की उपाधि से अलंकृत किया गया। 1941 में आपके गीतों और कविताओं का संग्रह 'कविता' नाम से महाकवि निराला की भूमिका के साथ प्रकाशित हुआ और तब से अब तक आपके 50 से ऊपर काव्य ग्रंथ और 2 गद्य नाटक प्रकाशित हुए। आपने हिंदी में गीत, दोहा, सॉनेट, रुबाई, ग़ज़ल, नई शैली की कविता और मुक्तक, काव्य नाटक, प्रबंध काव्य, महाकाव्य, मसनवी आदि के सफल प्रयोग किए हैं, जो पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी द्वारा संपादित गुलाब-ग्रंथावली के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे खंड में संकलित हैं। 'चाँदनी', 'आयु बनी प्रस्तावना', 'नाव सिन्धु में छोड़ी' जैसे गीत, 'कच-देवयानी', आलोकवृत्त' जैसे खंडकाव्य, 'बलि-निर्वास' जैसे काव्य नाटक, 'नूपुर बँधे चरण', 'शब्दों से परे', 'ऊसर का फूल' जैसे गीत और कविताएँ, 'प्रीत न करियो कोय' जैसे मसनवी, 'चंदन की कलम शहद में डुबो-डुबो कर', 'नए प्रभात की अँगड़ाइयाँ', 'व्यक्ति बनकर आ' जैसी कविताएँ, 'उषा' जैसे महाकाव्य, 'राजराजेश्वर अशोक', 'भूल' जैसे नाटक आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

साभार : कविता कोश.ऑर्ग

श्री अजित कुमार

18 जुलाई, 2017 को हिंदी के प्रसिद्ध कवि व गद्यकार श्री अजित कुमार का 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 9 जून, 1933 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ। आपका पूरा नाम श्री अजित शंकर चौधरी था। आप विख्यात कवयित्री श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा के बेटे थे। आपने कानपुर, लखनऊ और बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। आपने कुछ समय डी.ए.वी. कॉलिज, कानपुर में अध्यापन-कार्य किया। बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल महाविद्यालय में कई वर्षों तक अध्यापन कार्य करके सेवा-निवृत्त हुए। आपने लगभग 6 दशकों की अपनी साहित्यिक सक्रियता से हिंदी जगत को यथेष्ट समृद्ध किया। आपकी रचनाओं में 'अकेले कंठ की पुकार', 'अंकित होने दो,' 'ये फूल नहीं', 'घरौंदा', 'हिरनी के लिए', 'घोंघे' और 'ऊसर' जैसे कविता-संग्रह, 'दूरियाँ' उपन्यास, 'राहुल के जूते' तथा 'छाता और चारपाई' जैसे कहानी-संग्रह, 'दूर वन में', 'सफरी झोले में', 'निकट मन में', 'यहाँ से कहीं भी', 'अँधेरे में जुगनू', 'सफरी झोले में कुछ और' तथा 'जिनके संग जिया' जैसे संस्मरण और यात्रा-वृत्त, 'इधर की हिंदी कविता', 'कविता का जीवित संसार' और 'कविवर बच्चन के साथ' जैसी आलोचना पुस्तकें, नौ खंडों में 'बच्चन रचनावली', 'सुमित्रा कुमारी सिन्हा रचनावली', 'बच्चन निकट से', 'बच्चन के चुने हुए पत्र', 'हिंदी की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएँ' तथा 'गुरुवर बच्चन से दूर' आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आपने श्री देवीशंकर अवस्थी के साथ 'कविताएँ 1954' का संपादन किया।

साभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन, श्री विजय के. मल्होत्रा, हिंदी.वेबदुनिया.कॉम, लेखक मंच.कॉम

श्री आत्म प्रकाश शुक्ल

26 जुलाई, 2017 को कवि श्री आत्म प्रकाश शुक्ल का निधन हो गया। आपका जन्म वर्ष 1939 में कायमगंज के गाँव में हुआ। आप अलीगंज स्थित डी.ए.वी. कॉलिज में चार दशक तक अंग्रेज़ी के प्रवक्ता एवं प्रधानाचार्य रहे। शुरू से ही हिंदी साहित्य में आपकी रुचि रही। आपने छंद-व्यंग्य के माध्यम से समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया। आपकी रचनाओं में तीन पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें 'आत्म की धुन न्यारी', 'नहीं मरूँगा मैं' और 'आत्म प्रकाश संपूर्ण' शामिल हैं।

साभार : अमरउजाला.कॉम

श्रीमती स्नेहमयी चौधरी

29 जुलाई, 2017 को कवयित्री श्रीमती स्नेहमयी चौधरी का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 9 मई, 1935 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के मौरावां गाँव में हुआ था। आप जानकी देवी महाविद्यालय, दिल्ली में रीडर के पद पर नियुक्त थीं। सेवानिवृत्ति के बाद आप स्वतंत्र लेखन कर रही थीं। आपकी साहित्यिक कृतियों में 'पूरा गलत पाठ', 'चौतरफा लड़ाई', 'हड़कंप', 'पहचान', 'कैद', 'अपनी ही औरत', 'एक इंटरव्यू', 'घर', 'मेरा अपना कोना', 'लड़की' आदि प्रमुख हैं। आप स्व. लेखक श्री अजीत कुमार की पत्नी थीं।

साभार : नया इंडिया.कॉम व डेली हंट.इन

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संपादकीय

हिंदी की निरंतरता

यद्यपि हिंदी की उत्पत्ति भारत में हुई, तथापि उसका विकास भारत तक ही सीमित न रहा। इस भाषा की अद्‌भुत विशेषता यह है कि वह धरती के जिस भाग में भी पहुँची, वहाँ उसने अपना अस्तित्व एवं अपनी निरंतरता बनाए रखी। भारत में 3 शताब्दियों तक मुगलों का और दो शताब्दियों तक अंग्रेज़ों का राज्य रहा। हिंदी दीर्घकाल तक गुलामी की स्थिति से गुज़री। परंतु उसकी प्रगति कभी न रुकी। उर्दू, अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं की ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और अर्थात्मक संरचनाओं को अपनाकर यह भाषा गतिशील रही। उसका लचीलापन ही उसकी शक्ति बनी। सशक्त हिंदी भारत की 1600 से अधिक बोलियों में वरीय हुई। जिनकी मातृभाषा हिंदी न थी, उन्होंने भी हिंदी अपनायी और इस भाषा के लिए अभियान किया। हिंदी भारत की आज़ादी की लड़ाई की भाषा ही नहीं बनी, अपितु इस विशाल लोकतंत्र की राजभाषा एवं संपर्क भाषा भी बन गई।

19वीं और 20वीं शताब्दियों में भारतीयों के बृहत् आप्रवासन के साथ हिंदी का भौगोलिक विस्तार हुआ। सुदूर देशों में बसनेवाले भारतीयों के हृदय में हिंदी के प्रति प्रेम बढ़ा और इसी प्रेम-लगाव ने हिंदी के विकास की भूमि ऊर्वर की। यह भाषा पल्लवित और पुष्पित हुई और अंततः विश्वभाषा बनी। सितंबर महीने में हिंदी दिवस के संदर्भ में विश्व भर में हिंदी का सुन्दर वातावरण बना। हर हिंदी प्रचारिणी संस्था ने अपने ढंग से हिंदी दिवस मनाया। कहीं सम्मेलन हुआ, तो कहीं संगोष्ठी, कहीं कार्यशाला हुई, तो कहीं स्वरचित कविता-पाठ, कहीं बाल-गीत गायन हुआ, तो कहीं पुस्तक-लोकार्पण। कहीं एक दिन की गतिविधि हुई, तो कहीं सप्ताह भर गतिविधियाँ चलती रहीं। इन गतिविधियों में हिंदी में विचार किया गया और हिंदी में ही अभिव्यक्ति हुई। इससे विश्व में हिंदी की जीवंतता सिद्ध हुई।

विश्व हिंदी सचिवालय ने जुलाई 2017 से 'विचार-मंच' नामक कार्यक्रम का श्रीगणेश किया, जिसका उद्‌देश्य हर तीन महीने में, मॉरीशस या विश्व के किसी एक देश में एक ऐसा मंच तैयार करना है, जहाँ हिंदी के विद्वान्, सेवक, लेखक, शिक्षक, छात्र एवं प्रेमी मिलकर हिंदी भाषा एवं साहित्य की दशा और दिशा से संबंधित किसी एक महत्वपूर्ण विषय पर विचार करें और किए गए विमर्श के अनुसार कदम उठाते हुए हिंदी के विकास को नई दिशा प्रदान करें। प्रथम विचार-मंच का विषय था-'मोहन राकेश तथा आधे-अधूरे का शिक्षण'। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट बताती है कि एच.एस.सी की अंतरराष्ट्रीय परीक्षा में दिए गए विकल्पों में से छात्र ज्यादातर उन प्रश्नों का चयन करते हैं, जो कहानी और उपन्यास पर आधारित होते हैं। नाटक पर निबंध लिखनेवाले परीक्षार्थी अपेक्षाकृत कम होते हैं। विचार-मंच में नाटक के शिक्षण और अध्ययन से संबंधित व्याख्याता, शिक्षक और छात्र वर्ग के विचार सामने आए और नाटक के पठन-पाठन की नवीन विधियाँ स्पष्ट हुईं। 'आधे-अधूरे' का मंचन भी किया गया, जिसके अंतर्गत हिंदी में मौखिक अभिव्यक्ति हुई। नाटक के अध्ययन में रुचि बढ़ाने और छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि करने का एक कारगर उपाय नाटक का मंचन है। इसमें कोई दो राय नहीं।

हिंदी की समृद्धि का एक प्रमुख आधार हिंदी साहित्य रहा है। साहित्य-सृजन को बढ़ावा देने और लेखकों की नयी पीढ़ी तैयार करने के लक्ष्य से दूसरे विचार-मंच का विषय रखा गया-'युवकों द्वारा लघुकथा-लेखन'। इसके अंतर्गत 20 युवक-युवतियों ने स्वरचित लघुकथाएँ प्रस्तुत कीं। लेखकों को नित्य मंच प्रदान करने की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए विश्व हिंदी सचिवालय 'विश्व हिंदी साहित्य' नामक एक नई पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। इसमें प्रवासी देशों के लेखकों द्वारा गद्य एवं पद्य विधाओं में प्रणीत रचनाओं को प्रकाशित किया जाएगा, ताकि हिंदी साहित्य का नवीनतम स्वरूप तथा हिंदी का वैश्विक स्वरूप दोनों स्पष्ट हो।

अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी की पहचान बढ़ती जा रही है। देश-विदेश में हिंदी के शिक्षण और अध्ययन की नई योजनाएँ बन रही हैं। हिंदी-चीनी, हिंदी-वियतनामी, अरबी-हिंदी, कोरियाई-हिंदी, हिंदी-इटेल्यन, हिंदी-फ्रेंच आदि अनेकानेक द्विभाषी शब्द-कोशों का नित्य प्रकाशित होना, हिंदी के अध्ययन के प्रति बढ़ते आकर्षण का प्रमाण है। हिंदी-शिक्षण को अधिक सुविधाजनक बनाने के लक्ष्य से विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी में पाठ्य-सामग्री का निर्माण करने की पहल की है। ऐसी पाठ्य-सामग्री जो ध्वनि-उच्चारण, शब्द-प्रयोग और वाक्य-संरचना तीनों दृष्टियों से सर्वथा सरल और मान्य हो, जिसमें हिंदी संवाद की भाषा के रूप में प्रस्तुत हो। संवाद की भाषा सरल भाषा होती है, जो आसानी से समझी, सीखी और प्रयोग की जा सकती है। युग की माँग है कि हिंदी आज साहित्य या अनुवाद की भाषा के रूप में नहीं, अपितु संप्रेषण की भाषा के रूप में सीखी जाए। विश्व हिंदी सचिवालय संप्रेषण की भाषा हिंदी के सरलतम मानक रूप को पाठ्य-पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ाने में संलग्न है।

हिंदी की प्रगति न उस समय रुकी, जब वह दासों की भाषा बनी और न आज रुकेगी जब वह डिजीटल समाज से जुड़ चुकी है। बाधाएँ कल भी थीं और आज भी हैं, लेकिन हिंदी के प्रवाह में जब भी विघ्न उत्पन्न हुए तब हिंदी दूसरा रास्ता पकड़कर बहती रही, क्योंकि इस नदी को अपने चरम लक्ष्य तक, संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँचना ही है। निरंतरता हिंदी की स्वाभाविक प्रकृति है।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

एच. एस. सी. परीक्षा में एक मॉरीशसीय छात्रा हिंदी विषय में विश्व में अव्वल

2016 के कैम्ब्रिज हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट (12वीं) की परीक्षा में मॉरीशस के शर्मा जगदम्बी स्टेट सेकंडरी स्कूल की छात्रा निवेदिता रामी केरिया को पूरे विश्व में हिंदी विषय के लिए सबसे अधिक अंक प्राप्त हुए। उल्लेखनीय है कि कैम्ब्रिज की ये परीक्षाएँ इंग्लैंड और मॉरीशस सहित विश्व के अनेक देशों में आयोजित की जाती हैं, जहाँ माध्यमिक स्तर की पढ़ाई कैम्ब्रिज प्रणाली से होती है। इस उपलक्ष्य में 13 जुलाई, 2017 को मॉरीशस विश्वविद्यालय के पॉल ओक्ताव्ये ऑडिटोरियम, रेज्वी में आयोजित समारोह में निवेदिता रामी केरिया को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर उसने कहा 'हिंदी केवल फ़िल्मों से सिखी नहीं जा सकती, वह अन्य दूसरे विषयों की तरह है। मैं सदैव हिंदी के प्रति समर्पित रहूँगी।' निवेदिता को इस विशेष उपलब्धि के लिए विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से बधाई तथा उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

निवेदिता रामी केरिया

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

डॉ. हरीश नवल तथा डॉ. आशीष कंधवे बने साहित्य और संस्कृति की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका गगनांचल के संपादक तथा सहायक संपादक

डॉ. हरीश नवल

डॉ. आशीष कंधवे

जून में वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद् डॉ. हरीश नवल तथा प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. आशीष कंधवे को भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'गगनांचल' के संपादक तथा सहायक संपादक के पद पर मनोनीत किया गया है। डॉ. नवल 'इंडिया टुडे', 'माया प्रकाशन', 'दिल्ली प्रेस', 'हिंद वार्ता' एवं 'एन. डी. टी. वी.' से संबद्ध रहे तथा 'नवभारत टाइम्स', 'जनवाणी' (मॉरीशस) के स्तम्भ लेखक भी रह चुके हैं। वे 'गगनांचल' पत्रिका में संपादन सहयोग भी कर चुके हैं। डॉ. आशीष कंधवे 'आधुनिक साहित्य' पत्रिका के संपादक तथा विश्व हिंदी साहित्य परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

डॉ. हरीश नवल तथा डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
संपादकीय टीम : श्रीमती त्रिशिला सोमर-आपेगाडु, सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती उषा देवी आकाजिया-राम, श्रीमती विजया सरजु

पता : विश्व हिंदी सचिवालय, स्विफ़्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
Address : World Hindi Secretariat, Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone : +230 676 1196
फ़ैक्स/Fax : +230 676 1224
इ-मेल/Email : info@vishwahindi.com
वेबसाइट/Website : www.vishwahindi.com

Printed by **Cathay Printing Ltd.**, La Tour Koenig Industrial Zone, Pointe aux Sables, Mauritius Tel : +230 234 2668